सर्वेक्षण परिवार

भारतीय सर्वेक्षण विभाग
SURVEY OF INDIA
आ सेतु हिमाचलम्
1767

अंक : अष्टम्

वर्ष : 2024

पश्चिम बंगाल एवं सिक्किम भू-स्थानिक निदेशालय
भारतीय सर्वेक्षण विभाग, कोलकाता

सर्वेक्षण परिवार

सत्यमेव जयते

भारतीय सर्वेक्षण विभाग

SURVEY OF INDIA

आ सेतु हिमाचलम्

1767

சர்வேக்ஷன் பரிவார்

ಸರ್ವೇಕ್ಷನ್ ಪರಿವಾರ

സരേ്വഷ പരിവാർ

ਸਰਵੇਕ੍ਸ਼ਨ ਪਰਿਵਾਰ

সর্বেক্ষন পরিবার

ସର୍ଭେକ୍ଷଣ ପରିବାର

सर्वेक्षण् परिवारम्

सर्वेक्षण परिवार

సర్వేక్షన్ పరివార్

સર્વેક્ષણ પરિવાર

सर्व्हेक्षण परीवार

سارپیکسھان پارڳصار

Sarvekshan Pariwar

سروکشن پریوار

पश्चिम बंगाल व सिक्किम भू-स्थानिक निदेशालय

भारतीय सर्वेक्षण विभाग, कोलकाता

सर्वेक्षण परिवार

अंक - अष्टम् | वर्ष - 2024

बंगभूमि से प्रारम्भ हुआ

257 बसंत के पार हुआ

भारत का पठारी प्रदेश, या फिर हो हिमालय पहाड़

गंगा का मैदान, या फिर विशाल मरूभूमि थार

तटीय प्रदेश हो, या तंग दर्रे

हमारे सर्वेक्षकों ने किया सबका सर्वे

विविधताओं से भरा हमारा देश

सर्वेक्षण कार्य आसां नहीं 'शुभेश'

फिर भी पग-पग का किया सर्वेक्षण

भारत भूमि का सुन्दर, सटीक मानचित्रण

राष्ट्र की सेवा में सतत् समर्पित हमारा 'सर्वेक्षण परिवार'

पत्रिका का अष्टम् अंक प्रस्तुत है आपको साभार ।

पश्चिम बंगाल व सिक्किम भू - स्थानिक निदेशालय
भारतीय सर्वेक्षण विभाग, कोलकाता

सर्वेक्षण परिवार

पत्रिका में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण सम्बंधित लेखकों के स्वयं के हैं। भारतीय सर्वेक्षण विभाग का उससे सहमत होना आवश्यक नहीं है। लेखों/रचनाओं की मौलिकता के लिए लेखक स्वयं उत्तरदायी होंगे। यह पत्रिका विभागीय वेबसाईट www.surveyofindia.gov.in पर उपलब्ध है ।

संरक्षक

श्री उदय शंकर प्रसाद

निदेशक, पश्चिम बंगाल व सिक्किम
भू-स्थानिक निदेशालय, कोलकाता

प्रधान सम्पादक

श्री राहुल शर्मा

उप-अधीक्षण सर्वेक्षक, पश्चिम बंगाल व सिक्किम
भू-स्थानिक निदेशालय, कोलकाता

सम्पादक

श्री शुभेश कुमार

कार्यालय अधीक्षक, पश्चिम बंगाल व सिक्किम
भू-स्थानिक निदेशालय, कोलकाता

सम्पादन सहयोग

सुश्री ज्योति कुमारी

प्रवर श्रेणी लिपिक, पश्चिम बंगाल व सिक्किम
भू-स्थानिक निदेशालय, कोलकाता

श्री अमरजीत कुमार

अवर श्रेणी लिपिक, पश्चिम बंगाल व सिक्किम
भू-स्थानिक निदेशालय, कोलकाता

साज-सज्जा एवं डिजाईन

श्री शुभेश कुमार

कार्यालय अधीक्षक, पश्चिम बंगाल व सिक्किम
भू-स्थानिक निदेशालय, कोलकाता

सम्पर्क-सूत्र

पश्चिम बंगाल व सिक्किम भू-स्थानिक निदेशालय
भारतीय सर्वेक्षण विभाग, 13 वुड स्ट्रीट, कोलकाता
ई-मेल: wbs.gdc.soi@gov.in

- ❖ संदेश
- ❖ सम्पादकीय

क्रम सं.	शीर्षक	रचनाकार(श्री/श्रीमती)	पृष्ठ
1.	प्रार्थना-छमहुं नाथ सब अवगुण मेरे	शुभेश कुमार	10
2.	माँ	सुमिलन सरकार	11
3.	चलो चलें हम पेड़ लगाएं	शुचि दास	12
4.	रिमोट सेंसिंग डेटा पॉलिसी	उदय शंकर प्रसाद	13
5.	हिन्दी भारत की शान	शम्पा मुखर्जी	14
6.	आहार चेतना	शुभेश कुमार	15
7.	निरंतर प्रचालन संदर्भ स्टेशन (CORS) नेटवर्क	उदय शंकर प्रसाद	18
8.	चश्मा	राहुल शर्मा	21
9.	हमारा देश	सुपर्णा रॉय	22
10.	रहस्यमयी निशान	शुचि दास	23
11.	मानव जीवन में आध्यात्मिक व्यक्ति की जरूरतें	अनिरूद्ध बासु	24
12.	दरवाजा	राहुल शर्मा	25
13.	कभी तो मिटेंगे	शुभेश कुमार	26
14.	भारत की जनसंख्या वृद्धि, समस्या और समाधान	बिश्वनाथ नाग	27
15.	भारतीय अंतरिक्ष नीति	उदय शंकर प्रसाद	29
16.	उत्कीर्णन	सुशांत धर रॉय	30
17.	इंसानियत पर सवाल	शुभेश कुमार	31
18.	अमृत योजना	संतोष प्रसाद	32
19.	मेरी माँ	सरिता कुमारी राम	36
20.	मानव जीवन के लिए उचित भोजन	अनिरूद्ध बासु	37
21.	अशोक के फूल	काली प्रसाद मिश्रा	38
22.	पश्चिम बंगाल और सिक्किम राज्यों में NGP 2022 को लागू करने में इस निदेशालय का योगदान	शांति दास	39

स र्वे क्ष ण * प रि वा र

क्रम सं.	शीर्षक	रचनाकार(श्री/श्रीमती)	पृष्ठ
23.	भावना गाजी	स्वपन कुमार सरकार	41
24.	कब्ज से राहत कैसे पाएं	अनिरूद्ध बासु	43
25.	आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का उदय: निहितार्थ और अनुप्रयोग	गौतम आनन्द	44
26.	लिडार - एक नई तकनीक	प्रलय कुमार दास	46
27.	छोटी सी यादें	रूप कुमार दास	48
28.	श्री श्री शंकराचार्य	सुभाष चन्द्र संतरा	49
29.	अंटार्कटिका की डायरी से	रूप कुमार दास	51
30.	नैनीताल – अल्मोड़ा – राणीखेत – कौसानी भ्रमण	अंसुमान सरकार	52

चित्रांकन :

1. सुश्री शेफाली कुमारी - सुपुत्री : श्री उदय शकंर प्रसाद, निदेशक
2. श्री अंश प्रसाद - सुपुत्र : श्री उदय शकंर प्रसाद, निदेशक
3. सुश्री सेंजुती दास - सुपुत्री : श्री प्रलय कुमार दास, अधिकारी सर्वेक्षक
4. सुश्री अन्विता प्रसाद - सुपुत्री : श्री संतोष प्रसाद, अधिकारी सर्वेक्षक
5. सुश्री प्रीती सरकार - सुपुत्री : श्री स्वपन कुमार सरकार, कार्यालय अधीक्षक
6. श्री कीर्तिमान सरकार - सुपुत्र : श्री स्वपन कुमार सरकार, कार्यालय अधीक्षक
7. श्री रेबान्ता मुखर्जी - सुपुत्र : श्रीमती शम्पा मुखर्जी, कार्यालय अधीक्षक
8. सुश्री शुचि दास - सुपुत्री : श्री शुभेश कुमार, कार्यालय अधीक्षक
9. श्री उदित प्रकाश श्रेयांश - सुपुत्र : श्री शुभेश कुमार, कार्यालय अधीक्षक
10. श्री सोहम मण्डल - सुपुत्र : श्री तारापादा मण्डल, मानचित्रकार डिवि.।
11. श्रीमती सुपर्णा रॉय, प्रवर श्रेणी लिपिक
12. सुश्री आरूणि रॉय - सुपुत्री : श्रीमती सुपर्णा रॉय, प्रवर श्रेणी लिपिक

****

'ग' क्षेत्र अर्थात अहिन्दी भाषी क्षेत्र में कार्यालय की अवस्थिति के कारण व्याकरण की अथवा भाषायी अशुद्धता हो सकती है। अतएव, आदरणीय पाठकवृंद से अनुरोध है कि इस त्रुटि की ओर ध्यान नहीं दें।

हितेश कुमार एस. मकवाना, भा.प्र.से.
भारत के महासर्वेक्षक
Hitesh Kumar S. Makwana, I.A.S.
Surveyor General of India

भारतीय सर्वेक्षण विभाग
महासर्वेक्षक का कार्यालय
हाथीबड़कला एस्टेट
देहरादून-248001(उत्तराखण्ड)
SURVEY OF INDIA
Surveyor General's Office
Hathibarkala Estate
Dehradun-248001(Uttarakhand)

संदेश

यह हर्ष का विषय है कि पश्चिम बंगाल व सिक्किम भू-स्थानिक निदेशालय, कोलकाता द्वारा विभागीय हिन्दी पत्रिका 'सर्वेक्षण परिवार' के अष्टम् अंक का प्रकाशन किया जा रहा है।

भारत विविधताओं का देश है। इस विविधता में एकता की भूमिका निभाने का पावन कार्य हमारी राजभाषा हिन्दी करती है इसलिए हमें राजभाषा हिन्दी के प्रयोग को प्रोत्साहित करना चाहिए। अहिन्दी भाषी क्षेत्र में राजभाषा हिन्दी को लोकप्रिय बनाने में हिन्दी पत्रिकाएं सहायक होती है। पश्चिम बंगाल व सिक्किम भू-स्थानिक निदेशालय, कोलकाता द्वारा हिन्दी पत्रिका 'सर्वेक्षण परिवार' का प्रकाशन, कार्यालय के अधिकारियों / कर्मचारियों के मध्य राजभाषा हिन्दी को लोकप्रिय बनाएगा। आशा है कि अधिकारियों व कर्मचारियों की रचनात्मकता से हिन्दी पत्रिका 'सर्वेक्षण परिवार' के प्रकाशन की निरंतरता यूं ही बनी रहेगी।

पत्रिका के प्रकाशन कार्य से जुड़े सभी अधिकारियों व कर्मचारियों को 'सर्वेक्षण परिवार' के अष्टम् अंक के सफलता पूर्वक प्रकाशन के लिए बधाई एवं ढेरों शुभकामनाएं।

****

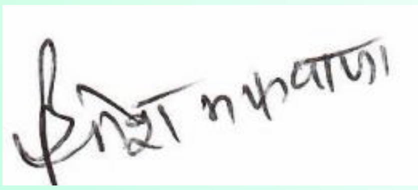

(हितेश कुमार एस. मकवाना)
भा.प्र.से.
भारत के महासर्वेक्षक

Tel (D) : +91-135-2744268
E-mail: **sgi.soi@gov.in**

एस. बी. शर्मा
अपर महासर्वेक्षक
S. B. Sharma
Addl. Surveyor General

भारतीय सर्वेक्षण विभाग
अपर महासर्वेक्षक का कार्यालय
पूर्वी क्षेत्र कार्यालय
14, वुड स्ट्रीट, कोलकाता-16 (प. बं.)
Survey of India
Office of the Addl. Surveyor General
14, Wood Street, Kolkata-16 (WB)
ई-मेल/E-mail: zone.east.soi@gov.in

संदेश

पूर्वी क्षेत्राधीन पश्चिम बंगाल एवं सिक्किम भू-स्थानिक निदेशालय, कोलकाता में राजभाषा हिन्दी की गृह पत्रिका ‘सर्वेक्षण परिवार’ का अष्टम् अंक का प्रकाशन किया जा रहा है, यह जानकर मुझे अत्यंत प्रसन्नता हो रही है।

हमारा देश एक अनेक भाषा-भाषी एवं विभिन्न प्रकार की सांस्कृतिक परम्पराओं का देश है। इस देश के हर नागरिक को एक सूत्र में बांधने के लिए तथा राष्ट्रीय एकता एवं अखंडता को अटूट रखने के लिए हिन्दी भाषा को राजभाषा की मान्यता दी गयी है। सरकारी कामकाज में हिन्दी भाषा के अधिकतम प्रयोग के माध्यम से हम यह लक्ष्य प्राप्त कर सकते हैं।

इस दिशा में सरकारी कार्यालय में सर्वेक्षण परिवार का प्रकाशन एक प्रशंसनीय कार्य है। इसलिए इस पत्रिका के सफल प्रकाशन से जुड़े सभी कर्मचारियों / अधिकारियों को मेरी शुभकामनाएं।

****

(एस. बी. शर्मा)
अपर महासर्वेक्षक, पूर्वी क्षेत्र

उदय शंकर प्रसाद
निदेशक
Uday Shanker Prasad
Director

भारतीय सर्वेक्षण विभाग
पश्चिम बंगाल व सिक्किम भू-स्थानिक निदेशालय
13, वुड स्ट्रीट, कोलकाता-16 (प. बं.)
Survey of India
WB & Sikkim Geo-spatial Directorate
13, Wood Street, Kolkata-16 (WB)
ई-मेल/E-mail: wbs.gdc.soi@gov.in

संदेश

पश्चिम बंगाल एवं सिक्किम भू-स्थानिक निदेशालय, कोलकाता द्वारा अपनी गृह पत्रिका 'सर्वेक्षण परिवार' के प्रकाशन की निरंतरता बनाए रखते हुए अष्टम् अंक प्रकाशित करने जा रहा है, यह अत्यंत हर्ष की बात है।

बीते दिनों हमारे कार्यालय ने राजभाषा हिन्दी के क्षेत्र में कई उपलब्धियों को हासिल किया है। गृह मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा जारी राजभाषा अनुपालन सम्बंधी वार्षिक कार्यक्रम में निर्धारित लक्ष्यों को तो हमने प्राप्त किया ही है, इसके अतिरिक्त विभिन्न अनुभागों में कार्यालयीन प्रयोग में राजभाषा के अधिकाधिक प्रयोग के लक्ष्य को भी हासिल किया है। इस हेतु इस निदेशालय को नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति द्वारा सम्मानित भी किया गया है। यह निदेशालय के अधिकारियों / कर्मचारियों के समेकित प्रयास से ही सम्भव हुआ है।

हिन्दी हमारी राजभाषा है और इसका स्वरूप विभिन्न भारतीय भाषाओं के सम्मिलित रूप से ही बना है। इसमें आप संस्कृत, बंगाली, उड़िया, अवधी, राजस्थानी, मराठी, पंजाबी आदि भाषाओं के अनेकों शब्दों की छवि देख सकते हैं। अतएव, हमें हिन्दी को विभिन्न भारतीय भाषाओं के मध्य सेतु का कार्य करने वाली भाषा मानकर इसके महत्व को पहचानना चाहिए एवं इसके उत्थान हेतु निरंतर प्रयास करना चाहिए।

हिन्दी पत्रिका का प्रकाशन इसी ओर उठाया गया एक कदम है। हम आशा करते हैं कि पत्रिका के विगत अंकों की भांति यह अंक भी आपको अवश्य पसंद आएगा। मैं 'सर्वेक्षण परिवार' पत्रिका के 'अष्टम् अंक' के सफलतापूर्वक प्रकाशन हेतु इस कार्य में संलग्न सभी अधिकारियों / कर्मचारियों को ढेरों शुभकामनाएं देता हूं।

****

उ शं प्रसाद
(उदय शंकर प्रसाद)
निदेशक
पश्चिम बंगाल व सिक्किम भू-स्थानिक निदेशालय

सम्पादकीय

श्री शुभेश कुमार, कार्यालय अधीक्षक
पश्चिम बंगाल व सिक्किम भू-स्थानिक निदेशालय

"रचना क्या है, कुछ शब्दों का ताना-बाना।
कुछ कहना, कुछ सुनना, बात वही जाना-पहचाना।"

इन रचनात्मकता के भाव का मूर्त रूप ही पुस्तकें, विशेषकर पत्रिकाएं होती हैं। मन में चल रहे विचार, अंतर्मन के झंझावात, हृदय की वेदना, जो किसी को दिखाई भी नहीं देते हैं, इस रचनात्मकता के द्वारा मूर्त रूप ले पाते हैं।

ये हमारे मन को कमजोर भी नहीं पड़ने देते, इसके उलट विपरीत परिस्थितियों में ये रचनात्मक गुण सम्बल बन जाते हैं। इसलिए व्यक्ति को रचनात्मक होना चाहिए। किसी प्रकार की भाषायी बाधा इसके आड़े नहीं आती। रचनात्मक प्रतिभा तो परिस्थिति के अनुसार विकसित होती है और समय के प्रहार से निखरकर सामने आती है।

सदैव की भांति इस अंक में भी हम अपने कार्यालय के सहकर्मी जनों एवं उनके परिवार के सदस्यों के रचनात्मक प्रतिभा का आनंद लेंगे। हमारी पत्रिका '**सर्वेक्षण परिवार**' अपने अष्टम सोपान पर पहुंच चुकी है। यह केवल आप सभी के समर्पित सहयोग से ही सम्भव हो पाया है। अतएव, आप सभी को इसके लिए अनेकानेक बधाई एवं ढेरों शुभकामनाएं। आशा करते हैं कि इस अंक के सभी आलेख पूर्व के अंकों की भांति आपको रूचिकर लगेंगे एवं संग्रहणीय होंगे।

कृपया पत्रिका के बारे में अपने विचारों से हमें अवश्य अवगत कराएं, इससे पत्रिका को हमें और बेहतर बनाने में सहायता मिलेगी। आप अपने विचार निम्नवर्णित पते पर ई-मेल से हमें भेज सकते हैं।

wbs.gdc.soi@gov.in
shubhesh.soi@gov.in

प्रार्थना: छमहुँ नाथ सब अवगुण मोरे

श्री शुभेश कुमार, कार्यालय अधीक्षक
पश्चिम बंगाल व सिक्किम भू-स्थानिक निदेशालय

पतित खड़ा मैं दुइ कर जोड़े, छमहुँ नाथ सब अवगुण मोरे ।
तेरी कृपा की आस संजोए, आन पड़ा मैं दर पर तेरे ।।

इन्द्रिय वश मैं पतित गुसांई, हरदम देखत दोष पराई ।
अपने अंतर दृष्टि न डालूँ, छल कपट सब मन में पालूं ।
पूजा पाठ नहीं नाम जपा मैं, फिर भी चाहूँ तेरी कृपा मैं ।।

तू भी सोचे किससे है पाला, मूढ़ अधम या भोला-भाला ।
अधम पतित मैं सुनहुँ गोसाईं, विनय करउँ तेरे चरणन आई ।।

माया चक्र से बाहर आऊं,
काम क्रोध पर विजय मैं पाऊँ ।
अग्नि, तन की शीतल होए,
मन की शान्ति सम्भव होए ।।

'शुभेश' अभिलाषी तेरे शरण की, विनती करता गहि चरणन की ।
निर्मल दृष्टि करो प्रभु मोरे, छमहुँ नाथ सब अवगुण मोरे ।।
पतित खड़ा मैं दुइ कर जोड़े, छमहुँ नाथ सब अवगुण मोरे ।।

****

माँ

श्री सुमिलन सरकार, सर्वेक्षक
पश्चिम बंगाल व सिक्किम भू-स्थानिक निदेशालय

माँ होती ममता की मूरत
इन चरणों में चारों धाम,
माँ है भगवान की सूरत
आओ माँ को करें प्रणाम,

माँ से लगता सब जग प्यारा
माँ से बढ़कर कौन सहारा,
माँ ही है जीवन की धारा
माँ से बढ़कर कौन हमारा,

माँ के बिना सूना जहान
माँ होती है देवी के समान,
उसके चरणों की हम धूल
माँ के बाग के हम हैं फूल,

माँ होती हैं संतान की आशा
माँ के बिना हर ओर निराशा।

****

चलो-चलें, हम पेड़ लगाएं

सुश्री शुचि दासः सुपुत्री श्री शुभेश कुमार,
कार्यालय अधीक्षक
पश्चिम बंगाल व सिक्किम भू-स्थानिक निदेशालय

सुन रे मानव अब तो संभलो, मत प्रकृति से खिलवाड़ करो।
तुम हो ईश्वर की उत्तम रचना, मत वनों का संहार करो।।

जिस धरती ने तुझे संवारा,
लोभ के वश हो उसे उजारा।
जीवनदायिनी पेड़ उखारे,
छिन्न—भिन्न कर दिये नजारे।।

जो तेरा है जीवन—रक्षक, जिस वायु से होते पोषित।
बड़े—बड़े उद्योग लगाकर, उस वायु को किया प्रदूषित।।

पर्वत को भी नहीं है छोड़ा,
यहां वहां हर जगह से तोड़ा।
वन उजाड़े और नदी को बांधा,
प्रकृति की हर सीमा को लांघा।।
जिसने ये संसार बनाया,
जीवन—ज्योति धरा पर लाया।
कृत्य भला ये कैसे सहता,
मूक—बधिर सा कब तक रहता।।
नदी-नहर, जल-स्रोत सूख गए
बूंद—बूंद को लोग तरस गए।
कहीं बाढ़—रूपी आयी विपदा,
और कहीं अब बादल फटता।।
कहीं बाढ़ है, कहीं सूखाड़,
चारों ओर है हाहाकार।
अब तो सम्भलो, सुन लो मानव
देखो गरमी बन गया दानव।।
इसका है बस यही उपाय
हरी-भरी धरती की जाए।
'शुचि' ने अब यह ठानी है
धरती को स्वर्ग बनानी है।।
तो चलो-चलें, हम पेड़ लगाएं
पर्यावरण को शुद्ध बनाएं।

****

रिमोट सेंसिंग डेटा पॉलिसी (RSDP-2011)

श्री उदय शंकर प्रसाद, निदेशक
पश्चिम बंगाल व सिक्किम भू-स्थानिक निदेशालय

देश की विकासात्मक आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए, भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (ISRO), अंतरिक्ष विभाग के राष्ट्रीय सुदूर संवेदन केंद्र (NRSC) को भारतीय और विदेशी दोनों उपग्रहों से सभी उपग्रही सुदूर संवेदन डेटा प्राप्त करने और प्रसारित करने का अधिकार दिया गया है।

NRSC प्राप्त करने वाले स्टेशनों के दृश्यता सर्कल के भीतर, IRS से डेटा प्राप्त करने/वितरित करने के लिए NRSC, अंतरिक्ष विभाग के साथ उचित व्यवस्था करेगा। NRSC या अंतरिक्ष कॉर्पोरेशन लिमिटेड, भारत में विदेशी उपग्रह डेटा के अधिग्रहण/वितरण के लिए विदेशी उपग्रह ऑपरेटरों के साथ समझौते करने के लिए सक्षम होंगे। हालांकि, एनआरएससी, अंतरिक्ष कॉर्पोरेशन लिमिटेड, के साथ सहमत शर्तों के अनुसार डेटा वितरित करेगा। एनआरएससी एक व्यवस्थित राष्ट्रीय सुदूर संवेदन डेटा संग्रह और सभी उपग्रहों के लिए डेटा के सभी अधिग्रहण/बिक्री का लॉग बनाए रखेगा। भारत के अलावा अन्य देशों में उपयोग के लिए IRS डेटा के अधिग्रहण और वितरण के लिए, भारत सरकार नोडल एजेंसी के माध्यम से उन देशों के ऐसे निकायों/एजेंसियों को लाइसेंस प्रदान करेगी जो विशिष्ट प्रक्रियाओं के अनुसार IRS डेटा के अधिग्रहण/वितरण में रुचि रखते हैं।

अंतरिक्ष कॉर्पोरेशन लिमिटेड (अंतरिक्ष विभाग का) भारत के बाहर IRS डेटा के अधिग्रहण/वितरण के लिए लाइसेंस देने हेतु आवेदन प्राप्त करने, सरकार के नीतिगत विचारों के भीतर लाइसेंस देने के बारे में विचार करने और निर्णय लेने और सरकार की ओर से संभावित उपयोगकर्ताओं के साथ लाइसेंसिंग समझौते करने का अधिकार रखता है। अंतरिक्ष कॉर्पोरेशन लिमिटेड, यदि उचित समझे तो, लाइसेंस देने के लिए ऐसे शुल्क लगाने के लिए भी सक्षम होगा। यह, जहां आवश्यक हो, लाइसेंस के लिए आवश्यक किसी भी अतिरिक्त सहायता/मार्गदर्शन को प्रदान करने के लिए भी जिम्मेदार होगा।

सरकार, भारत में उपग्रह सुदूर संवेदन डेटा के प्रसार के लिए अपनाए जाने वाले निम्नलिखित दिशा-निर्देश निर्धारित करती है:

- 1 मीटर तक के रिज़ॉल्यूशन के सभी डेटा को बिना किसी भेदभाव के और "अनुरोध के आधार पर" वितरित किया जाएगा।

- राष्ट्रीय सुरक्षा हितों की रक्षा के उद्देश्य से, 1 मीटर से बेहतर रिज़ॉल्यूशन के सभी डेटा को वितरण से पहले उपयुक्त एजेंसी द्वारा जांचा जाएगा और मंजूरी दी जाएगी; तथा निम्नलिखित प्रक्रिया का पालन किया जाएगा:
    - सरकारी उपयोगकर्ता अर्थात् मंत्रालय/विभाग/सार्वजनिक क्षेत्र/स्वायत्त निकाय/सरकारी अनुसंधान एवं विकास संस्थान/सरकारी शैक्षणिक/शैक्षणिक संस्थान, बिना किसी अतिरिक्त मंजूरी के डेटा प्राप्त कर सकते हैं।
    - विकास गतिविधियों का समर्थन करने के लिए कम से कम एक सरकारी एजेंसी द्वारा अनुशंसित निजी क्षेत्र की एजेंसियां, बिना किसी अतिरिक्त मंजूरी के डेटा प्राप्त कर सकती हैं।
    - वेब आधारित सेवा प्रदाताओं सहित अन्य निजी, विदेशी और अन्य उपयोगकर्ता, पहले से मौजूद अंतर-एजेंसी उच्च रिज़ॉल्यूशन छवि मंजूरी समिति (High Resolution Image Clearance Committee) (HRC) से आगे की मंजूरी के बाद डेटा प्राप्त कर सकते हैं।
    - किसी भी उपयोगकर्ता द्वारा संवेदनशील क्षेत्रों के डेटा के लिए विशिष्ट अनुरोध, HRC से मंजूरी प्राप्त करने के बाद ही वितरित किया जा सकता है। 1 मीटर से बेहतर रिज़ॉल्यूशन के डेटा के लिए एनआरएससी और अन्य उपयोगकर्ताओं के बीच विशिष्ट बिक्री/गैर-प्रकटीकरण समझौते किए जाने चाहिए। यह नीति (RSDP-2011) तुरंत प्रभाव से लागू होती है और सरकार द्वारा समय-समय पर इसकी समीक्षा की जा सकती है।

आधिकारिक सूचना के लिए आप निम्नवर्णित स्रोत पर जा सकते हैं-
https://www.nrsc.gov.in/EOP_irsdata_Policy/page_1

****

हिन्दी भारत की शान

श्रीमती शम्पा मुखर्जी, कार्यालय अधीक्षक
पश्चिम बंगाल व सिक्किम भू-स्थानिक निदेशालय

हिन्दी देश का राजभाषा है
राजभाषा सभी भाषाओं का प्रतीक है
हिन्दी सभी देशवासियों की धड़कन है
हिन्दी भारत की शान है।

हिन्दी को स्वतंत्रता आंदोलन ने मान दिया
स्वतंत्रता सेनानी ने बल दिया
संविधान निर्माताओं ने सम्मान दिया।

भारत एक भाषिक विविधता का राष्ट्र है
इस विविधता में हिन्दी एकता की सोपान है
हिन्दी सभी देशवासियों की धड़कन है
हिन्दी भारत की शान है।

****

आहार चेतना

श्री शुभेश कुमार, कार्यालय अधीक्षक
पश्चिम बंगाल व सिक्किम भू-स्थानिक निदेशालय

किसी भी मनुष्य का विचार उसके आहार पर निर्भर करता है। सात्विक आहार से शुद्ध विचार की उत्पति होती है। इस सम्बंध में श्रेष्ठजनों से सुनी एक लघुकथा आपके साथ साझा करना चाहता हूँ।

बहुत समय पहले की बात है, एक परम ज्ञानी तपस्वी ऋषि थे। वे बालपन से ही भगवत प्रेमी एवं सदाचारी थे। वे गांव-गांव घूम कर उपदेश दिया करते थे। एक बार गर्मी के समय वे किसी गांव से गुजर रहे थे। रेगिस्तानी इलाका था, इसलिए उन्हें शीघ्र ही प्यास सताने लगी। बहुत दूर चलने के बाद उन्हें एक कुंआ दिखाई दिया। वहां रखी बाल्टी से पानी निकाल कर उन्होंने अपनी प्यास बुझाई। प्यास बुझने के बाद उनके मन में एक विचार आया कि क्यों न मैं ये बाल्टी जल से भर कर अपने साथ रख लूं ताकि आगे यात्रा के दौरान मुझे प्यास लगे तो मुझे प्यास से तड़पना न पड़े। यह सोचकर उन्होंने बाल्टी पानी से भरी और साथ लेकर आगे बढ़ चले। कुछ देर चलने के पश्चात मानों उनका ध्यान टूटा। वे सोचने लगे मुझ से कितना बड़ा पाप हो गया। मैंने कभी कोई बुरा कार्य नहीं किया और आज मैंने चोरी कर ली। वह भी ऐसे कुंए के बाल्टी की चोरी, जो न जाने कितने प्यासों को तृप्त करती थी। वे यह सोचने के लिए विवश हो गए कि इतना तप एवं भगवत ध्यान के पश्चात भी मेरे मन में ऐसे कुत्सित भाव कैसे उत्पन्न हुए। वे इसका पता लगाने पहुंचे। गांव वालों से उन्हें ज्ञात हुआ कि यह कुंआ एक चोर ने अपने आखिरी समय में पुण्य प्राप्ति हेतु चोरी के धन से खुदवाई थी। अब उन्हें समझ में आया कि चोरी का यह भाव उनके मन में कैसे उत्पन्न हुआ।

कहा भी गया है- जैसा खाए अन्न, वैसा होए मन। तो शुद्ध विचार के लिए आहार सात्विक होना परम आवश्यक है। सात्विक आहार अर्थात शाकाहार। शाकाहार हमारे शरीर को अनेक व्याधियों से बचाता है। आज जब संपूर्ण विश्व हमारे गौरवशाली भारतीय संस्कृति पर मंथन कर उसे आत्मसात कर रही है। वहीं गौतम बुद्ध, महावीर जैन, कबीर, नानक जैसे महान पुरूषों की जननी इस वसुंधरा की संतति होकर भी हम पाश्चात्य संस्कृति के अंधानुकरण में लगे हुए हैं। अभी हाल ही में मैंने एक लेख पढ़ा था जिसमें बताया गया था कि इंग्लैण्ड एवम् अमेरिका में हाल के दशक में शाकाहार अपनाने वालों की संख्या में बहुत तेजी से वृद्धि हुई है। हमें इस विषय पर आत्ममंथन करने की आवश्यकत्ता है कि जिस बौद्ध धर्म ने भारत के बाहर अनेक देशों में अपनी अमिट छाप छोड़ी है, वह अपने ही देश में उपेक्षित क्यों है। महावीर, कबीर, नानक के विचार यहीं अप्रासंगिक क्यों है।

मैं सर्वप्रथम शाकाहार पर बल देने हेतु इसके मानवीय पक्ष को आपके सामने प्रस्तुत करता हूं। दया, संयम, उचित-अनुचित का भेद-ज्ञान यही सब गुण तो मनुष्य को मनुष्य बनाता है। अन्यथा उसमें और पशु में क्या अंतर रह जाएगा? यही तो मानवता है। अब मैं आपसे कुछ प्रश्न पूछना चाहता हूं। यदि आपके घर में कोई शुभ कार्य होता है अर्थात विवाह, जन्मोत्सव आदि, तो उन अवसरों पर भी प्राय: मांस का सेवन किया जाता है। आप बताएं कि अपने पुत्र के जन्म की खुशी

मनाने के लिए किसी और के पुत्र की बलि चढ़ाना उचित है? आप जिस जीव (बकरी, मुर्गी, मछली आदि) का मांस परोस रहे हैं वह भी तो किसी का पुत्र/पुत्री था। खुशी आपके घर आई, इसमें उनका क्या दोष जिन्हें अपना सदस्य खोना पड़ा या अपना बलिदान देना पड़ा। तनिक विचार कर देखिए।

इस सम्बंध में परम् पूज्य गुरूदेव की कृपा से, मैं अपनी एक रचना आपके समक्ष रखना चाहता हूं। यूं तो यह रचना मैंने मैथिली भाषा में लिखी थी, परंतु मैथिली भाषा की हिन्दी से निकटता के कारण आपको समझने में विशेष कठिनाई नहीं होगी।

नयन नीर भरि रोए बकरिया, कोन कसूरवा मोर रे।
घासे पाते हम चिबाबी, नै किनको त हम सताबी,
करी ने हम बलजोर रे.....................................।
अपन बच्चा सन मनुखक बच्चा, दूध पीएलौं, बूझि के सच्चा
लाज ने आबौ तोर रे.......................................।
शुभ अवसर तोहर घर आओल, मंगलगीत सखी सब गाओल
हमहूँ नचितौं जोर रे.......................................।
कोन कसुरवे हम सताओल, रुधिर धार किआ मोर बहाओल
मांस खाओल किआ मोर रे............................।
कहलथि सदगुरु सत्य कबीर, जम केर फ़ांस में पड़लै जीव
जनम सुधारो तोर रे, 'शुभेश' सुधारो तोर रे।।
नयन नीर भरि रोए बकरिया, कोन कसूरवा मोर रे।

(शब्दार्थ : नै – नहीं, चिबाबी -चबाते हैं, सताबी – सताते हैं, बलजोर – जबरदस्ती, मनुखक – मनुष्य का, कसूरवे – अपराध के कारण, सताओल – परेशान किया, जम – यम)

अब मैं शाकाहार के धार्मिक पक्ष से आपको अवगत कराना चाहूंगा। भगवान महावीर ने जीव-हत्या को अत्यंत निकृष्ट कार्य माना है एवम् शुद्ध-सात्विक आहार पर सर्वाधिक बल दिया है। उन्होंने तो शुद्ध आहार के साथ-साथ प्राणवायु की शुद्धता पर भी बल दिया है। आप जैन पंथ के मानने वालों को देखते होंगे कि वे मुंह पर कपड़ा बांधकर रखते हैं। वो इसलिए कि भूल से भी श्वास के माध्यम से कोई जीव, कीट-पतंग उनके मुंह में न चला जाए और वे उनकी हत्या के अपराधी न हो जाएं। परन्तु उनके विचार गृहस्थ एवम् सामाजिक व्यवस्था में प्रचलित नहीं हो पाये क्योंकि उनके बनाए नियम अधिकांशतः सन्यास व्यवस्था पर आधारित थे। वहीं गौतम बुद्ध ने इसे थोड़ा सरल बनाकर सामाजिक व्यवस्था के अनुकूल बनाया। इस कारण वह उस समय बहुत प्रचलित हुआ। उन्होंने भी जीव-हत्या को सर्वथा निषेध बताया। दशावतार में गौतम बुद्ध को भगवान विष्णु का नौवां अवतार माना गया है। वेदों में भी कहा गया है –

"व्रीहिमत्तं' यवमत्तमथोमाषम तिलम् एष वां भागो निहितो रत्नधेयाय दन्तौ मा हिंसिष्टं पितरं मातरं च ।" अर्थात चावल खाओ (व्रीहिम् अत्तं) जौ खाओ (यवम् अत्तं) और उड़द खाओ (अथो माषम) और तिल खाओ (अथो तिलम्)। हे ऊपर नीचे के दांत (दन्तौ) तुम्हारे (वां) ये भाग (एव भागो) निहित है उत्तम फलादि के लिए (रत्नधेयाय)। किसी नर और मादा को (पितरं मातरं च) मत मारो (मा हिं सिष्टं)।

संत कबीर साहब ने कहा है-

जस मांसु पशु की तस मांसु नर की, रूधिर-रूघिर एक सारा जी।
पशु की मांस भखै सब कोई, नरहिं न भखै सियारा जी।।
ब्रह्म कुलाल मेदिनी भरिया, उपजि बिनसि कित गईया जी।
मांसु मछरिया तो पै खैये, जो खेतन मंह बोईया जी।।
माटी के करि देवी-देवा, काटि-काटि जीव देईया जी।
जो तोहरा है सांचा देवा, खेत चरत क्यों न लेईया जी।।
कहँहि कबीर सुनो हो संतो, राम-नाम नित लेईया जी।
जो किछु कियउ जिभ्या के स्वार्थ, बदल पराया लेईया जी।। (शब्द-70)

शब्दार्थ :- जैसा पशु का मांस, वैसा ही मनुष्य का मांस है। दोनों में एक ही रक्त बहता है। मांसाहारी पशु मांस का भक्षण करते हैं और जो मनुष्य ऐसा करता है वो सियार के समान है। ईश्वर रूपी कुम्हार (ब्रह्म कुलाल) ने इतने बाग-बगीचे बनाये, फल-फूल बनाया वो सब उपज कर कहां जाते हैं। मांस-मछली खाना तो दोषपूर्ण (पै) है। उसे खाओ जो खेतों में बोआ जाता है। मिट्टी के देवी-देवता बनाकर उन्हें जीवित पशु की बलि चढ़ाते हो। यदि तुम्हारे देवता सचमुच बलि चाहते हैं तो वह खेतों में चरते हुए पशुओं को क्यों नहीं खा जाते। कबीर साहेब कहते हैं कि यह सब कर्म त्याग कर नित राम-नाम (भगवान नाम) का सुमिरन किया करो। अन्यथा तुम जो भी अपने जिह्वा के स्वाद के कारण यह कर रहे हो उसका बदला भी तुम्हें उसी तरह चुकाना पड़ेगा।

एक दूसरी जगह संत कबीर कहते हैं - **“पंडित एक अचरज बड़ होई। एक मरि मुये अन्न नहिं खाई । एक मरि सीझै रसोई।”** अर्थात हे पंडितों, ज्ञानियों एक बहुत बड़े अचरज (आश्चर्य) की बात सुनाता हूं। एक जीव के मरने पर तो तुम शोक मनाते हो और अन्न नहिं खाते हो वहीं दूसरी ओर एक जीव को मारकर रसोई बनाते हो।

अब शाकाहार के सम्बंध में कुछ वैज्ञानिक तथ्यों पर भी प्रकाश डालते हैं। हमारे शरीर की रचना कुछ इस प्रकार की है जिससे वह शाकाहारी प्राणियों के समूह में आता है। मांसाहारी जंतुओं में मांस को चीरने-फाड़ने के लिए बेहद नुकीले व पैने दांत पाया जाता है। परंतु मनुष्यों में इसका अभाव होता है। वहीं समस्त मांसाहारी जीव अपनी जिह्वा (जीभ) से पानी पीते हैं। परंतु शाकाहारी जंतु पानी घूंट-घूंट कर पीते हैं और गटकते हैं, मनुष्य भी ऐसा ही करता है। आप यदि कहीं विक्षिप्त शव या कोई मांस का टुकड़ा इत्यादि देखते हैं तो सर्वप्रथम घृणा का भाव उत्पन्न होता है। क्योंकि हमारे शरीर की बनावट शाकाहारी जंतु की है, इसलिए मस्तिष्क सम्बंधित तंत्रिका को घृणा का भाव प्रेषित करता है, जिससे हम विक्षिप्त शव या कोई मांस का टुकड़ा इत्यादि देखते ही मुंह फेर लेते है। यदि हमारा शरीर मांसाहारी प्रकृति का होता तो हमारे लिए यह लालसा की वस्तु होती। परंतु ऐसा नहीं होता। इसके अतिरिक्त मांस के सेवन से पशु-पक्षियों को होने वाले रोग भी मनुष्यों में फैलने की आशंका रहती है। इसलिए सात्विक भोजन ही करना चाहिए।

छान्दोग्योपनिषद में कहा गया है- **“आहार शुद्ध होने से अंतःकरण की शुद्धि होती है, अंतःकरण के शुद्ध हो जाने से भावना दृढ होती है और भावना की स्थिरता से हृदय की समस्त गांठे खुल जाती है।”**

इस सम्पूर्ण आलेख का सार यह है कि अपनी आहार चेतना को जागृत कर हमें शाकाहार पर बल देना चाहिए। शाकाहार ही सर्वोत्तम आहार है।

****

"निरंतर प्रचालन संदर्भ स्टेशन" (सीओआरएस) नेटवर्क

श्री उदय शंकर प्रसाद, निदेशक
पश्चिम बंगाल व सिक्किम भू-स्थानिक निदेशालय

मानननीय केंद्रीय विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार), प्रधानमंत्री कार्यालय, कार्मिक, लोक शिकायत, पेंशन, परमाणु ऊर्जा और अंतरिक्ष राज्य मंत्री डॉ. जितेंद्र सिंह ने 12 अक्टूबर 2023 को अत्याधुनिक नवीनतम राष्ट्रव्यापी "निरंतर प्रचालन संदर्भ स्टेशन" (सीओआरएस) नेटवर्क "Continuously Operating Reference Stations" (CORS) Network का शुभारंभ किया।

भारत के पास अब विश्व स्तरीय सटीक स्थान आधारित (Precise Location based service) सेवा है, जो वास्तविक समय में सेंटीमीटर स्तर की स्थिति निर्धारण सेवाएँ प्रदान करने में सक्षम है।

भारतीय सर्वेक्षण विभाग ने पूरे भारत में 1,000 से अधिक सीओआरएस स्टेशन स्थापित किए हैं।

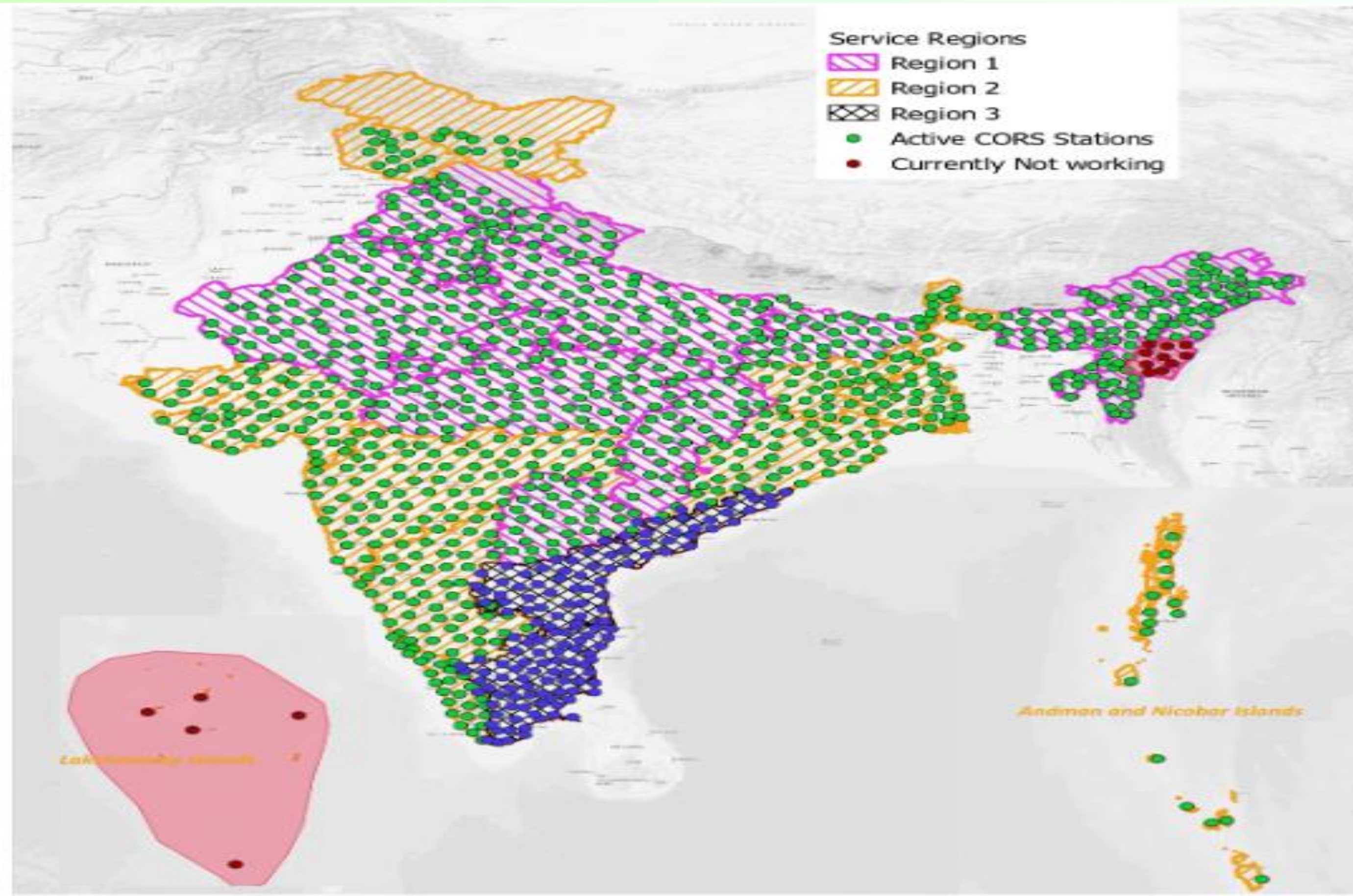

भू-स्थानिक क्षेत्र (Geospatial sector) के अतिरिक्त, CORS आधारित परिशुद्धता सेवाएं कृषि, खनन, निर्माण, परिवहन में ऑटो नेविगेशन और नागरिक उड्डयन क्षेत्रों और मशीन नियंत्रण-आधारित समाधान को भी बढ़ावा देंगी।

ग्लोबल नेविगेशन सैटेलाइट सिस्टम (GNSS) ने स्थान की जानकारी (location information) तक पहुँचने की हमारी क्षमता में क्रांतिकारी बदलाव किया है। संक्षेप में, यह रेडियो संकेतों के माध्यम से पूर्वनिर्धारित कक्षाओं में पृथ्वी पर मंडरा रहे उपग्रहों के समूह से अपनी दूरी मापता है और पृथ्वी पर अपनी स्थिति का अनुमान लगाता है। हालाँकि, इन प्रणालियों में ऑर्बिट त्रुटियाँ, सैटेलाइट क्लॉक त्रुटि, रिसीवर शोर, आयनमंडलीय और क्षोभमंडलीय देरी, रिसीवर के ऊपर उपग्रह ज्यामिति और मल्टीपाथ आदि के कारण त्रुटि का अपना हिस्सा है, जो इसकी सटीकता में 10 -11 मीटर तक की कमी का कारण बनता है। इस सटीकता सीमा को पार करने के लिए, विभिन्न सर्वेक्षण तकनीकों जैसे DGNSS, स्टेटिक GPS/GNSS सर्वेक्षण, RTK, आदि का उपयोग भू-स्थानिक समुदाय द्वारा किया जा रहा है।

अधिकांश जीएनएसएस अनुप्रयोगों में, जहां सटीक स्थिति निर्धारण की आवश्यकता होती है, उपयोगकर्ता आमतौर पर अपने जीएनएसएस उपकरणों को अन्य जीएनएसएस उपकरणों के साथ, एक साथ जोड़ते हैं, एक या अधिक ज्ञात स्थितियों का अवलोकन करते हैं, जिन्हें संदर्भ स्टेशन कहा जाता है, और इन संदर्भ स्टेशनों की सहायता से रुचि के बिंदु या रोवर की स्थिति पर लागू किए जाने वाले अनुमानित सुधार स्थैतिक जीएनएसएस सर्वेक्षण या वास्तविक समय-गतिज (आरटीके) सर्वेक्षण विधियों के माध्यम से प्राप्त किए जाते हैं।

उपयोगकर्ताओं को हर बार जीएनएसएस माप लेने के लिए अपना स्वयं का संदर्भ स्टेशन स्थापित करने की आवश्यकता न होने की सुविधा प्रदान करने तथा देशव्यापी सुसंगत संदर्भ फ्रेम प्रदान करने के लिए भारतीय सर्वेक्षण विभाग ने निरंतर प्रचालन संदर्भ स्टेशनों (सीओआरएस) का एक नेटवर्क स्थापित किया है, जो न केवल आरटीके/एनआरटीके के माध्यम से (+/-) 3 सेमी की सटीकता के साथ वास्तविक समय स्थिति निर्धारण सेवा प्रदान करने में सक्षम है, बल्कि भू-स्थानिक और वैज्ञानिक समुदाय के विभिन्न खंडों की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए लक्षित विभिन्न स्थिति निर्धारण सेवाओं की एक श्रृंखला की मेजबानी भी करता है।

CORS स्टेशन (या GNSS रिसीवर) स्थायी संस्थापन हैं और लगातार उपग्रह अवलोकनों को एक केंद्रीय सर्वर पर स्ट्रीम करते हैं। संदर्भ स्टेशनों और केंद्रीय सर्वर की पूरी व्यवस्था को निरंतर संचालन संदर्भ स्टेशन (CORS) नेटवर्क "Continuously Operating Reference Stations" (CORS) Network के रूप में जाना जाता है। विशेष सॉफ़्टवेयर चलाने वाला केंद्रीय सर्वर रोवर को नेटवर्क रियल-टाइम किनेमेटिक (NRTK) सुधार भेजकर रोवर की स्थिति को और अधिक परिष्कृत करता है।

C.O.R.S. प्रसंस्करण एवं पर्यवेक्षण केंद्र, देहरादून

उपयोगकर्ता अपने रोवर के साथ NRTK सुधार प्राप्त करने के लिए मासिक या वार्षिक आधार पर CORS नेटवर्क की सदस्यता ले सकते हैं, बजाय इसके कि उन्हें अपना खुद का बेस स्टेशन स्थापित करना पड़े। CORS नेटवर्क प्रतिदिन 24 घंटे, सप्ताह में 7 दिन और वर्ष में 365 दिन उपलब्ध है। हालाँकि, यह संचार सेवा प्रदाता और उपग्रह उपलब्धता पर निर्भर करता है। गैर-स्वामित्व (non-proprietary) वाली RTCM 2.4, RTCM 3.2 प्रोटोकॉल की डेटा स्ट्रीमिंग किसी भी मेक NRTK सक्षम GNSS रोवर के लिए वास्तविक समय में समर्थित है और उपयोगकर्ता पोस्ट-प्रोसेसिंग के लिए इंटरनेट के माध्यम से केंद्रीय सर्वर से संग्रहीत GNSS डेटा भी प्राप्त कर सकते हैं। उपयोगकर्ता ऑनलाइन प्रोसेसिंग के लिए स्थिर सर्वेक्षण GNSS डेटा (static survey GNSS data) भी सबमिट कर सकते हैं।

CORS का उपयोग करने के लिए पंजीकरण हेतु आप इस लिंक पर विजिट कर सकते हैं:-

https://cors.surveyofindia.gov.in/registration.php

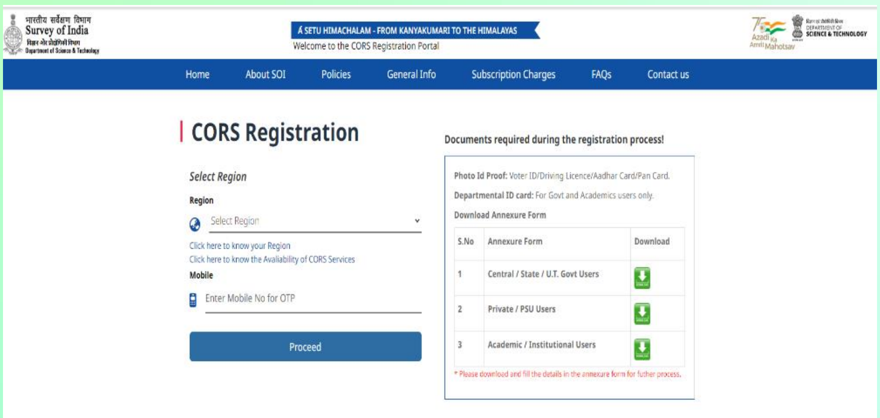

CORS के उपयोग के संबंध में यूट्यूब वीडियो ट्यूटोरियल लिंक सर्वे ऑफ इंडिया वेबसाइट पर उपलब्ध है:

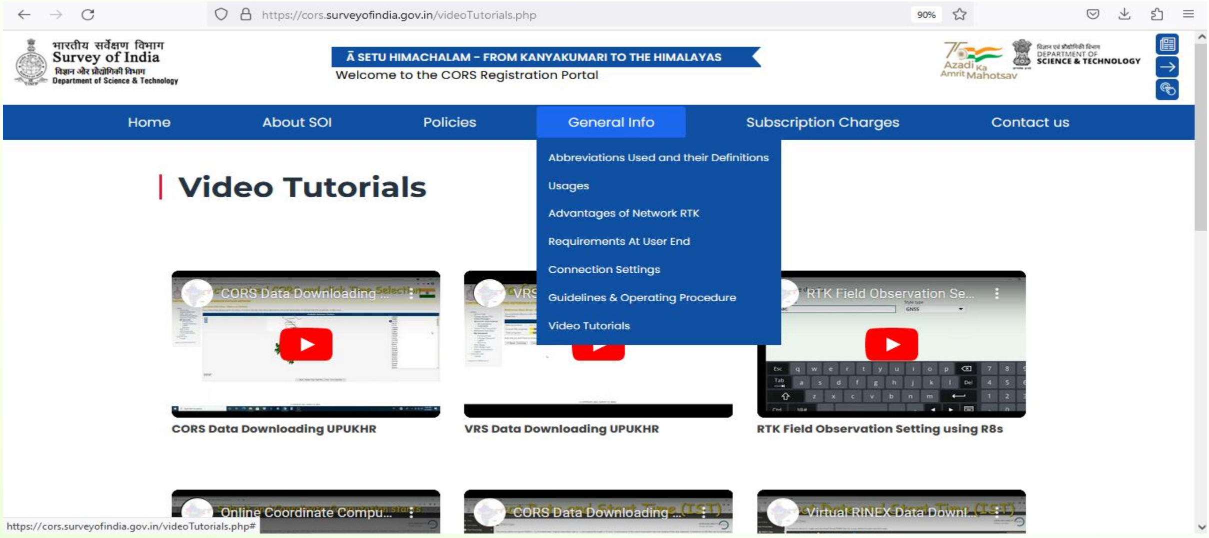

****

चश्मा

श्री राहुल शर्मा, उप-अधीक्षण सर्वेक्षक

पश्चिम बंगाल व सिक्किम भू-स्थानिक निदेशालय

बच्चे मन के सच्चे ये इसलिए सही है, क्योंकि बच्चों के मन में किसी भी प्रकार का द्वेष नहीं होता। पर जैसे-जैसे वो बड़े होते जाते हैं, लोग जात-पात, ऊंच-नीच, धर्म-सम्प्रदाय इत्यादि का अमली **चश्मा** पहना देते हैं। जो बच्चा बिना **चश्मे** के सब कुछ साफ देख पा रहा था, उसे **चश्मा** पहना करके वो ही दिखाया जाता है, जो लोगों को सही लगता है, इसमें बच्चे को उसकी इक्छा के बारे में पूछा तक नही जाता। मैं ये नहीं कह रहा कि **चश्मा** पहनना ग़लत है। ये कई मायनों में सही भी है, इससे आप अच्छे और बुरे में अंतर कर पाएंगे, मैं बस ये कह रहा हू कि, **चश्मा** अपनी मर्जी का पहनो, क्योंकि तुम्हे तय करना है क्या देखना है और क्या नहीं।

****

हमारा देश

श्रीमती सुपर्णा रॉय, प्रवर श्रेणी लिपिक
पश्चिम बंगाल व सिक्किम भू-स्थानिक निदेशालय

देश हमारा जहां हैं ठहरा ,
बड़ा गंभीर एक मुद्दा है ।
आवाम की बात कोई न सुने,
नेताओं का रंगीन चेहरा है ।

भावनाओ की कोई कदर नहीं ,
आदमी से बरा झंडा है ।
इंसाफ पिसते पैरों तले,
राजनीति का ये उसूल है।

परमात्मा को किसी ने न ढूँढा,
सब "महात्मा" में डूबते है ।
लालच से चल रही दुनियादारी,
इंसान सब कठपुतलियां हैं ।

इस अन्याय को जो भी रोकेगा,
वही पुरूषोत्तम कहलायेगा।
अपना ईमान बेच खाए जो
वो अपनी लंका जलायेगा ।

अपने आपको जलाकर देखो
हर मानव अग्नि की सन्तान है ।
(जिंदा) लाशों के बीच मिसाल बने जो,
देश का सच्चा नागरिक हैं ।।

****

रहस्यमयी निशान

सुश्री शुचि दासः सुपुत्री श्री शुभेश कुमार,
कार्यालय अधीक्षक
पश्चिम बंगाल व सिक्किम भू-स्थानिक निदेशालय

एक दिन की बात है मैं जब स्कूल से लौट रही थी, तो अपने कॉलोनी के गेट के पास मुझे कुछ विचित्र निशान दिखाई पड़े। वह निशान किसी मनुष्य के तो कतई नहीं थे। मैं थोड़ी डर गई, लेकिन मैंने फिर अपना जासूसी दिमाग लगाया और उस निशान का पीछा करना शुरू किया।

निशान का पीछा करते-करते मैं अपने घर के पास पहुंच गई। वह निशान मेरे घर के समीप जाकर समाप्त हो रहा था। अब तो मैं वाकई में डर गई। मैंने डरते-डरते डोरबेल बजाई। माँ ने दरवाजा खोला, परंतु उनके चेहरे पर कोई अलग भाव नहीं थे। मैं और उलझ गई। मुझे इन विचित्र निशान का रहस्य समझ में नहीं आ रहा था। आखिरकार मैंने माँ से पूछ ही लिया – 'माँ ये रहस्यमयी निशान किसके हैं?'

'ये !' माँ ने दरवाजा बंद करते हुए बोला – 'आज एक गाय की बछिया कीचड़ से लथपथ भागते-भागते इधर आई थी। उसके पैरों में कपड़े का एक टुकड़ा फंसा हुआ था। उसी से यह विचित्र निशान बने हैं। मैंने उसे रोटी खिलाई फिर वो चली गई।'

मैंने राहत की सांस ली।

****

मानव जीवन में आध्यात्मिक व्यक्ति की जरूरतें

श्री अनिरूद्ध बासु, कार्यालय अधीक्षक
पश्चिम बंगाल व सिक्किम भू-स्थानिक निदेशालय

आध्यात्मिकता मानव जीवन का एक महत्वपूर्ण पहलू है जिसमें विश्वास, मूल्य और अभ्यास शामिल हैं जो व्यक्तियों को खुद से बड़ी किसी चीज़ से जुड़ने में मदद करते हैं। मानव जीवन में आध्यात्मिक व्यक्ति की ज़रूरतें बहुआयामी हैं और समग्र कल्याण और पूर्ति के लिए आवश्यक हैं। इस निबंध में, मैं एक आध्यात्मिक व्यक्ति की विभिन्न ज़रूरतों और वे कैसे एक सार्थक और उद्देश्यपूर्ण जीवन में योगदान करते हैं, इस पर चर्चा करूँगा।

आध्यात्मिक व्यक्ति की प्राथमिक ज़रूरतों में से एक है अपनेपन और जुड़ाव की भावना। यह ज़रूरत धार्मिक या आध्यात्मिक समुदायों में भाग लेने, अनुष्ठानों और प्रथाओं में शामिल होने और समान विचारधारा वाले व्यक्तियों के साथ संबंध बनाने के माध्यम से पूरी होती है। ये संबंध समर्थन, मार्गदर्शन और एकता की भावना प्रदान करते हैं जो व्यक्ति की आध्यात्मिक यात्रा को बढ़ाता है। इसके अतिरिक्त, आध्यात्मिक समुदाय से संबंधित होने से जीवन में उद्देश्य और अर्थ की भावना को बढ़ावा मिल सकता है, क्योंकि व्यक्ति समान लक्ष्यों और आदर्शों की दिशा में मिलकर काम करते हैं।

आध्यात्मिक व्यक्ति की एक और महत्वपूर्ण ज़रूरत आंतरिक शांति और शांति की भावना है। ध्यान, प्रार्थना और माइंडफुलनेस जैसी आध्यात्मिक प्रथाएँ व्यक्तियों को दैनिक जीवन की अराजकता के बीच शांति और स्थिरता की भावना विकसित करने में मदद कर सकती हैं। ये अभ्यास आत्म-जागरूकता, आत्म-स्वीकृति और खुद की तथा अपने आस-पास की दुनिया की गहरी समझ को बढ़ावा देते हैं। आंतरिक शांति की भावना को पोषित करके, आध्यात्मिक व्यक्ति चुनौतियों का सामना करने, बाधाओं को दूर करने और जीवन के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण बनाए रखने के लिए बेहतर ढंग से सुसज्जित होते हैं।

आध्यात्मिक व्यक्ति को व्यक्तिगत विकास और आत्म-सुधार की भी आवश्यकता होती है। आध्यात्मिकता व्यक्तियों को उनके विश्वासों, मूल्यों और व्यवहारों पर चिंतन करने और जागरूकता, करुणा और सहानुभूति के उच्च स्तरों के लिए प्रयास करने के लिए प्रोत्साहित करती है। आध्यात्मिक अभ्यासों में संलग्न होकर और आध्यात्मिक मार्गदर्शन प्राप्त करके, व्यक्ति आत्म-जागरूकता, भावनात्मक बुद्धिमत्ता और नैतिक तर्क की अधिक समझ विकसित कर सकते हैं। आत्म-सुधार की यह सतत प्रक्रिया न केवल व्यक्ति को, बल्कि समुदाय और पूरे विश्व को भी लाभ पहुँचाती है।

इसके अलावा, आध्यात्मिक व्यक्ति को जीवन में उद्देश्य और अर्थ की भावना की आवश्यकता होती है। आध्यात्मिकता व्यक्तियों को दुनिया में उनके स्थान, दूसरों से उनके संबंध और व्यापक भलाई पर उनके प्रभाव को समझने के लिए एक रूपरेखा प्रदान करती है। अपने मूल्यों और कार्यों को अपने आध्यात्मिक विश्वासों के साथ जोड़कर, व्यक्ति अधिक उद्देश्यपूर्ण और पूर्ण जीवन जी सकते हैं। उद्देश्य की यह भावना आध्यात्मिक व्यक्तियों को दिशा, प्रेरणा और पूर्णता की एक मजबूत भावना देती है जो उन्हें जीवन की चुनौतियों और जीत के माध्यम से बनाए रखती है।

निष्कर्ष में, मानव जीवन में आध्यात्मिक व्यक्ति की ज़रूरतें व्यक्तिगत विकास, कल्याण और पूर्णता के लिए आवश्यक हैं। अपनेपन, आंतरिक शांति, व्यक्तिगत विकास और उद्देश्य की भावना को बढ़ावा देकर, आध्यात्मिकता व्यक्तियों को जीवन की जटिलताओं को नेविगेट करने, खुद से बड़ी किसी चीज़ से जुड़ने और एक सार्थक और उद्देश्यपूर्ण अस्तित्व जीने में मदद करती है। एक स्नातक छात्र के रूप में, मैं मानव जीवन में आध्यात्मिकता के महत्व और किसी के समग्र कल्याण और पूर्णता की भावना पर पड़ने वाले गहन प्रभाव को पहचानता हूँ। इन ज़रूरतों को पूरा करने के माध्यम से ही व्यक्ति वास्तव में फल-फूल सकता है और एक उद्देश्यपूर्ण और सार्थक जीवन जी सकता है।

****

दरवाजा

श्री राहुल शर्मा, उप-अधीक्षण सर्वेक्षक
पश्चिम बंगाल व सिक्किम भू-स्थानिक निदेशालय

लोग कहते है, भगवान अगर एक दरवाजा बंद करता है तो दूसरा दरवाजा खोल देता है।

पर असल मायनों में सच तो ये है कि, दरवाजा (निकलने का रास्ता) हर वक्त बदलते रहता है। दरवाजा खोलने में थोड़ी सी देर और दरवाजा खुलने की जगह बदल जाती है। आप फिर कोशिश करते है, दूसरा दरवाजा बनाते है, पर इस बार दरवाजा बनाने में गलती हो जाती है और उधर खुलने की जगह फिर बदल जाती है। फिर आप खिड़की बनाते है, फिर छोटी खिड़की और फिर अन्ततः दीवार में एक छेद। आप, जो पहले दरवाजे से निकलकर दुनिया देखने के ख्वाब देख रहे थे, अब केवल एक छेद बनाकर बाहर की दुनिया देख लेने भर में संतुष्ट हो जाते हैं।

मैं कहता हूं, जब चीज़ें इतनी विपरीत हो ही गयी है कि, आपको एक छेद से बाहरी दुनिया देखने पे मजबूर कर दें। तो क्यों ना, खाली बैठकर एक छेद से दुनिया देखने के बजाय, सारी दीवार में छेद ही छेद कर दिए जाएं। इतने छेद, कि अब दरवाजा जगह बदलना भी चाहे तो अंदर से दिख जाए और क्यों न सही मौका आने पर उस दीवार को तोड़ दिया जाए।

****

कभी तो मिटेंगे

श्री शुभेश कुमार, कार्यालय अधीक्षक
पश्चिम बंगाल व सिक्किम भू-स्थानिक निदेशालय

उदासी भरे दिन, कभी तो मिटेंगे
मिटेंगे कभी तो, निशा के अंधेरे
कभी तो छटेंगे, दु:ख के ये बादल
मिलेंगे कभी हम,सुख के सवेरे

मुरझायी कलियाँ, कभी तो खिलेंगी
मिलेंगी कभी तो, भौरों से तेरे
महकेगा गुलशन, अपना कभी तो
फैलेगी खुशबू, फ़िज़ाओं में मेरे

शाखों से टूटा, टहनी बना मैं
झुकता सिकुड़ता, फिर भी तना मैं
कब तक रहेंगे, यूँ ही भटकते
कभी तो मिलेगी, गुल से गुलिस्ते

अश्कों से भींगे, नयन ये हमारे
लबों पे हंसी पर, सितमगर तुम्हारे
हँस लो नियति पे, तुम भी अभी तो
होगा समय "शुभेश", अपना कभी रे।

****

भारत की जनसंख्या वृद्धि की समस्या और संभावित समाधान

श्री बिश्वनाथ नाग, मैप क्यूरेटर
पश्चिम बंगाल व सिक्किम भू-स्थानिक निदेशालय

भारत, दुनिया का दूसरा सबसे अधिक (कुछ सर्वेक्षणों/रिपोर्टों के अनुसार, पहला) जनसंख्या वाला देश है, जो तेजी से बढ़ती आबादी से जूझ रहा है और इसके साथ ही जो महत्वपूर्ण चुनौतियों और अवसरों को जन्म देता है। 140 करोड़ से अधिक लोगों के साथ, भारत के जनसांख्यिकीय रुझान, इसके आर्थिक, सामाजिक और पर्यावरणीय भविष्य को आकार दे रहे हैं। इसलिए, भारत की जनसंख्या वृद्धि के सठिक कारणों और परिणामों और इस वृद्धि को स्थायी रूप से नियंत्रित या प्रबंधित करने के लिए लागू की जाने वाली रणनीतियों का पता लगाना उचित है।

उच्च जनसंख्या वृद्धि के कारण

भारत की उच्च जनसंख्या वृद्धि में कई कारक योगदान देते हैं :

1. उच्च जन्म दर: हाल के वर्षों में प्रजनन दर में गिरावट के बावजूद , भारत की जन्म दर वैश्विक मानकों की तुलना में अपेक्षाकृत उच्च बनी हुई है। पारंपरिक मूल्य, सामाजिक-आर्थिक कारक और परिवार नियोजन सेवाओं तक सीमित पहुंच उच्च जन्म दर में योगदान करती है।
2. मृत्यु दर में कमी: स्वास्थ्य सेवा में प्रगति, बेहतर स्वच्छता और बेहतर जीवन स्थितियों ने मृत्यु दर में उल्लेखनीय कमी की है। इस जनसांख्यिकीय बदलाव के परिणामस्वरूप बड़ी, युवा आबादी के साथ लंबी जीवन प्रत्याशा हुई है।
3. सांस्कृतिक और सामाजिक-आर्थिक कारक: कई क्षेत्रों में, बड़े परिवारों को अभी भी वांछनीय माना जाता है। इसके अतिरिक्त, गरीबी और शिक्षा की कमी जैसे सामाजिक-आर्थिक कारक अक्सर उच्च जन्म दर के लिए जिम्मेदार हैं।

वृद्धि के परिणाम :

भारत की तीव्र जनसंख्या वृद्धि के परिणाम बहुआयामी हैं:

1. आर्थिक तनाव: तीव्र जनसंख्या वृद्धि संसाधनों, बुनियादी ढांचे और सार्वजनिक सेवाओं पर दबाव डालती है । बढ़ती आबादी को पर्याप्त रोजगार, शिक्षा और स्वास्थ्य सेवा प्रदान करने की चुनौती देश के आर्थिक विकास पर दबाव डालती है।
2. पर्यावरणीय प्रभाव: अधिक जनसंख्या के कारण पर्यावरण संबंधी समस्याएं बढ़ती हैं, जिनमें वनों की कटाई, प्रदूषण और संसाधनों की कमी शामिल है। पानी, ऊर्जा और भूमि की मांग बढ़ती है, जिससे प्राकृतिक संसाधनों का अत्यधिक दोहन होता है।
3. शहरीकरण और बुनियादी ढांचा: ग्रामीण क्षेत्रों से शहरों की ओर पलायन के परिणामस्वरूप शहरी केंद्रों में भीड़भाड़ बढ़ जाती है । इस तीव्र शहरीकरण के कारण आवास की कमी , परिवहन संबंधी समस्याएं और अपर्याप्त स्वच्छता सुविधाएं उत्पन्न होती हैं।

4. सामाजिक चुनौतियाँ: जनसंख्या वृद्धि के कारण सामाजिक सेवाओं पर दबाव पड़ता है और शिक्षा, स्वास्थ्य सेवा और जीवन की गुणवत्ता में असमानताएँ बढ़ती हैं। इससे गरीबी और बेरोज़गारी जैसी समस्याएँ भी बढ़ती हैं।

जनसंख्या वृद्धि से निपटने की रणनीतियाँ :

भारत की जनसंख्या वृद्धि से निपटने के लिए बहुआयामी दृष्टिकोण की आवश्यकता है:

1. परिवार नियोजन और शिक्षा: परिवार नियोजन सेवाओं और शैक्षिक कार्यक्रमों तक पहुँच का विस्तार करने से व्यक्तियों को प्रजनन के बारे में सूचित विकल्प बनाने में मदद मिल सकती है। गर्भनिरोधकों के उपयोग को बढ़ावा देना और प्रजनन स्वास्थ्य शिक्षा प्रदान करना जन्म दर को नियंत्रित करने के लिए महत्वपूर्ण है।
2. महिलाओं को सशक्त बनाना : शिक्षा और रोजगार के अवसरों के माध्यम से महिलाओं को सशक्त बनाना आवश्यक है। अध्ययनों से पता चलता है कि शिक्षित महिलाएं कम बच्चे पैदा करती हैं और अपने बच्चों की शिक्षा और स्वास्थ्य पर अधिक निवेश करती हैं।
3. स्वास्थ्य सेवा में सुधार : स्वास्थ्य सेवाओं, विशेष रूप से मातृ एवं शिशु स्वास्थ्य को बेहतर बनाने से मृत्यु दर में कमी आ सकती है और समग्र स्वास्थ्य में सुधार हो सकता है। शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य दोनों को संबोधित करने वाले व्यापक स्वास्थ्य सेवा कार्यक्रमों की आवश्यकता है।
4. शहरी नियोजन और बुनियादी ढांचे का विकास : टिकाऊ शहरी नियोजन रणनीतियों का विकास और बुनियादी ढांचे में निवेश शहरी क्षेत्रों पर दबाव को कम कर सकता है। सार्वजनिक परिवहन, आवास और स्वच्छता में सुधार से जीवन की गुणवत्ता में सुधार हो सकता है और टिकाऊ विकास को बढ़ावा मिल सकता है।
5. आर्थिक विकास: रोजगार सृजन और गरीबी कम करने की पहल के माध्यम से आर्थिक विकास को बढ़ावा देने से उच्च जन्म दर के मूल कारण को दूर करने में मदद मिल सकती है। जीवन स्तर में सुधार और आर्थिक अवसर प्रदान करने पर परिवार कम बच्चे पैदा करने का विकल्प चुन सकते हैं।
6. नीति कार्यान्वयन और सरकारी सहायता: प्रभावी नीति कार्यान्वयन और मजबूत सरकारी सहायता महत्वपूर्ण है। सरकार को अपनी नीतियों में जनसंख्या प्रबंधन को सर्वोच्च प्राथमिकता देनी चाहिए, यह सुनिश्चित करना चाहिए कि परिवार नियोजन, शिक्षा और स्वास्थ्य सेवा का समर्थन करने के लिए संसाधन उचित मात्रा में आवंटित किए जाएं।

इसलिए, संक्षेप में, भारत की जनसंख्या वृद्धि चुनौतियों और अवसर, दोनों को प्रस्तुत करती है। जबकि जनसंख्या में तेज़ वृद्धि संसाधनों और बुनियादी ढांचे पर दबाव डाल सकती है, लेकिन दूसरी तरफ यह आर्थिक वृद्धि और विकास की संभावना भी प्रदान करती है। परिवार नियोजन, शिक्षा , स्वास्थ्य सेवा और आर्थिक विकास को संबोधित करने वाली व्यापक रणनीतियों को लागू करके, भारत अपनी जनसंख्या वृद्धि को स्थायी रूप से नियंत्रित या प्रबंधित कर सकता है। सरकार, सामुदायिक संगठनों और व्यक्तियों को शामिल करने वाले एक सहयोगी प्रयास के माध्यम से , भारत अपने जनसांख्यिकीय परिवर्तन को पथ-प्रदर्शित कर विकास और जनसंख्या वृद्धि में स्थिरता के बीच संतुलन हासिल कर सकता है।

****

भारतीय अंतरिक्ष नीति (Indian Space Policy) – 2023

श्री उदय शंकर प्रसाद, निदेशक
पश्चिम बंगाल व सिक्किम भू-स्थानिक निदेशालय

भारतीय अंतरिक्ष नीति-2023 को, कैबिनेट द्वारा अनुमोदित सुधार दृष्टिकोण को लागू करने के लिए एक व्यापक, समग्र और गतिशील ढांचे के रूप में तैयार किया गया है।

दृष्टिकोण / विजन

✓ अंतरिक्ष क्षमताओं को बढ़ाना;
✓ अंतरिक्ष में एक समृद्ध वाणिज्यिक उपस्थिति को सक्षम, प्रोत्साहित और विकसित करना;
✓ प्रौद्योगिकी विकास के चालक के रूप में अंतरिक्ष का उपयोग करना और संबद्ध क्षेत्रों में लाभ प्राप्त करना;
✓ अंतर्राष्ट्रीय संबंधों को आगे बढ़ाना, और सभी हितधारकों के बीच अंतरिक्ष अनुप्रयोगों के प्रभावी कार्यान्वयन के लिए एक पारिस्थितिकी तंत्र (ecosystem) बनाना;
✓ राष्ट्र के सामाजिक-आर्थिक विकास और सुरक्षा, पर्यावरण और जीवन की सुरक्षा, बाहरी अंतरिक्ष की शांतिपूर्ण खोज को आगे बढ़ाना, सार्वजनिक जागरूकता और वैज्ञानिक खोज को प्रोत्साहित करना।

डेटा प्रसार दिशानिर्देश 2023 (Data Dissemination Guidelines 2023)

1. 5 मीटर रिज़ॉल्यूशन और अपरिष्कृत डेटा (IRS द्वारा प्राप्त):
   - ❖ अधिग्रहण के 24 घंटे बाद भूनिधि और मोसडैक पोर्टल से मुफ्त डाउनलोड के लिए उपलब्ध होगा।
   - ❖ उत्पादों को रेडियोमेट्रिक और ज्यामितीय रूप से सही किया जाएगा।
   - ❖ डेटा को ISRO को उचित क्रेडिट के साथ स्वतंत्र रूप से इस्तेमाल, पुन: उपयोग और पुनर्वितरित किया जा सकता है।
   - ❖ सभी संग्रहीत डेटा (तीन महीने से पुराना डेटा) भी मुफ्त डाउनलोड के लिए उपलब्ध है।
2. 5 मीटर रिज़ॉल्यूशन से परिष्कृत डेटा:
   - ❖ सभी सरकारी एजेंसियों के लिए निःशुल्क उपलब्ध है।
   - ❖ अन्य सभी उपयोगकर्ता इस डेटा को NSIL से शुल्क के आधार पर प्राप्त कर सकते हैं।
3. व्युत्पन्न थिमैटिक डेटा (Derived Thematic Data):
   - ❖ 5 मीटर रिज़ॉल्यूशन से अधिक व्युत्पन्न थिमैटिक डेटा स्वतंत्र रूप से उपलब्ध है।

4. IRS डेटा – परिष्कृत रिज़ॉल्यूशन डेटा, मूल्य वर्धित डेटा का सभी वाणिज्यिक वितरण NSIL द्वारा किया जाएगा।

5. संवेदनशील क्षेत्रों को मास्क नहीं किया जाएगा। प्रकाशकों को नकारात्मक सूची के रूप में दी गई विशेषताओं के ऊपर प्रतिबंधों पर भू-स्थानिक दिशानिर्देशों का पालन करना होगा। (The publishers need to follow Geospatial guidelines on restrictions on attributes given as Negative list.)

****

उत्कीर्णन

श्री सुशांत धर रॉय, सहायक प्रबंधक
पश्चिम बंगाल व सिक्किम भू-स्थानिक निदेशालय

कब तक तुम मुझको उकेरते रहोगे
तुम्हारे चाकू की हर चुटकी
मुझे बहुत दर्द देती है।

बेरहम तेरी अदा से
क्रूरता से
घायल हो जाता हूं।

लेकिन मैं,
मैं कभी नहीं मरता

जब तुम रचते हो,
कला का अदभुत संसार
उकेरते हो,
अपने दिल के उद्गार

तो तुम्हारी नई-नई कलाओं में
मैं फिर से जी उठता हूं
वही दर्द सहने को
फिर से घायल होने को
उठ खड़ा होता हूं।।

'हमारे उन सभी नक्काश (Engraver) को समर्पित, जिन्होंने धातु की प्लेट पर मानचित्र और अन्य रचनात्मक कार्य करके भारतीय सर्वेक्षण विभाग का नाम रोशन किया।

******

इंसानियत पर सवाल

श्री शुभेश कुमार, कार्यालय अधीक्षक
पश्चिम बंगाल व सिक्किम भू-स्थानिक निदेशालय

एक अदद सुकून का ही तो सवाल था,
जो जी का जंजाल बन गया
किसी की हैवानियत का जिंदा मिसाल बन गया
जिंदगी लील ली, इज्जत तार-तार कर गया,
इंसानियत पर सवाल हजार कर गया

नजरें तो खूबसूरती की कद्रदान हमेशा से रही हैं
पर तीर-ए-नजर जिस्म को तार-तार कर गया
किस-किस को शक की नजर से देखूं
दोस्त, रिश्तेदार, सहकर्मी, सीनियर-जूनियर
अपना-पराया, किस-किस की नजर को परखूं
और कैसे परखूं, क्या ही परखूं

घंटों की अनवरत सेवा के बाद
बस सुकून के दो पल ही तो लेने गई थी
वो जगह जहां घर से अधिक समय रहती थी
जहां सभी दोस्त थे, सीनियर थे, जूनियर थे

और सबसे बड़ी बात वो जगह केवल कर्मस्थली मात्र नहीं थी
इंसानियत की मिसाल थी
जहां न जानें कितने दु:खी जन प्रति दिन आते थे
और सुखी होकर जाते थे

आज वही कर्मस्थली इंसानियत की कब्रगाह बनी
समस्त मानवता जिसकी जिंदा गवाह बनी

पर अब भी कई चेहरे मौन हैं, नि:शब्द हैं
तो मेरी बेचैनी क्यों बढ़ती जाती है
मेरी हलक क्यों सूखती जाती है
क्यों मुझे रातों को नींद नहीं आती है

लोगों की सुसुप्तावस्था कर रही है मुझे परेशां
क्या अभी भी जिंदा हैं लोग, क्या बची है उनमें जां
अब तो रब से यही दरख्वास्त है **'शुभेश'**
इंसान को इंसानियत दो, वरना कुछ न रहेगा शेष।

****

अमृत योजना

श्री संतोष प्रसाद, अधिकारी सर्वेक्षक
पश्चिम बंगाल व सिक्किम भू-स्थानिक निदेशालय

कायाकल्प और शहरी परिवर्तन के लिए अटल मिशन (Atal Mission for Rejuvenation and Urban Transformation) सबसे महत्वपूर्ण विषयों में से एक है- अमृत मिशन (AMRUT Mission)।

अमृत मिशन 1.0 I AMRUT Mission 1.0

अमृत योजना (1.0) 25 जून 2015 को शुरू की गई थी। यह सार्वजनिक-निजी भागीदारी (पीपीपी) के अनुपालन में भारत सरकार के आवास और शहरी मामलों के मंत्रालय के अंतर्गत आती है। कायाकल्प और शहरी परिवर्तन के लिए अटल मिशन के अनुसार,

अमृत एक नजर में

अमृत योजना फुल फॉर्म :	कायाकल्प और शहरी परिवर्तन के लिए अटल मिशन
शुरू:	25 जून 2015
मंत्रालय:	आवास और शहरी मामलों के मंत्रालय
उद्देश्य:	शहरी परिवर्तन

अमृत मिशन का अब तक का विकास :

1. घोषणा के अनुसार, मिशन ने जून 2021 तक 193 करोड़ यूनिट बिजली की बचत करते हुए 105 लाख घरेलू नल कनेक्शन, 78 लाख सीवर/सेप्टेज कनेक्शन और 88 लाख स्ट्रीटलाइट बदलने की आपूर्ति की है।

2. द एनर्जी एंड रिसोर्सेज इंस्टीट्यूट (टेरी) के अनुसार, अमृत योजना के परिणामस्वरूप 84.6 लाख टन कार्बन फुटप्रिंट में कमी आई है।

3. अमृत की राष्ट्रीय रैंकिंग: 2019 में अमृत रैंकिंग के अनुसार, भारत के 10 राज्य हैं जो शीर्ष 10 सूची में हैं: मिजोरम, तेलंगाना, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, कर्नाटक, राजस्थान, झारखंड, जम्मू और कश्मीर।

4. भारतीय राज्य ओडिशा को अमृत कार्यान्वयन में पहला स्थान मिला। यह लगातार शहरी बुनियादी ढांचे में सुधार और शहरी प्रशासन में सुधार के लिए पहले स्थान पर आया। राज्य को 100 में से 66.24 अंक मिले हैं।

भारतीय राज्य चंडीगढ़ AMRUT की राष्ट्रीय रैंकिंग में दूसरे स्थान पर है।

2.29 लाख घरेलू नल कनेक्शन सफलतापूर्वक पूरे करने के साथ हरियाणा 12वें स्थान पर रहा।

हिमाचल प्रदेश को 15वां स्थान मिला है। 17,600 से अधिक नए कनेक्शन जोड़कर, हिमाचल प्रदेश ने 13,003 नए आवासीय जल नल कनेक्शन के अपने लक्ष्य को पार कर लिया है। अब तक, उत्तराखंड ने 36,554 नए कनेक्शन पेश किए हैं।

अमृत 2.0 I AMRUT 2.0

AMRUT 2.0 योजना 1 अक्टूबर 2021 को प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा शुरू की गई थी।

कायाकल्प और शहरी परिवर्तन 2.0 के लिए अटल मिशन (एएमआरयूटी 2.0) की स्थापना (एसडीजी 6) हासिल करने और जल क्षेत्र में रहने की आसानी को 500 से बढ़ाकर सभी वैधानिक शहरों में करने के लिए की गई है।

- 2030 तक, सतत विकास लक्ष्य का इरादा सभी क्षेत्रों में पानी के उपयोग की दक्षता में उल्लेखनीय सुधार करना है, स्थायी मीठे पानी की निकासी सुनिश्चित करना और पानी की कमी का अनुभव करने वाले लोगों की संख्या को काफी कम करना है।
- यह इस बात की भी गारंटी देगा कि 500 अमृत शहरों में सीवेज/सीवेज प्रबंधन का पूरा कवरेज है।
- अमृत 2.0 की मुख्य विशेषताएं I Highlights of AMRUT 2.0
- आत्मनिर्भर भारत : अमृत मिशन 2.0 शहरों को "पानी सुरक्षित" बनाने और हर घर में जल नल कनेक्शन प्रदान करने के लिए एक कदम है।
- यह जल स्रोतों के संरक्षण, जल निकायों और कुओं को पुनर्जीवित करने, उपचारित पानी का पुनर्चक्रण/पुन: उपयोग करने और पूरे समुदाय की मदद से वर्षा जल एकत्र करने के लिए पानी की उपयोग करके पूरा किया जाएगा।
- यह मिशन एक नागरिक द्वारा संचालित पहल, या जन आंदोलन के रूप में चलाया जाएगा।
- सामुदायिक भागीदारी सुनिश्चित करना : मिशन महिलाओं और युवाओं को इसके विकास पर चल रहे फीडबैक के लिए सूचीबद्ध करेगा।
- शहरी स्थानीय निकायों (ULB) की जल सुरक्षा और वित्तीय स्थिरता जैसे सुधार : पानी से संबंधित प्रमुख सुधारों में पुनर्नवीनीकरण पानी के माध्यम से पानी की मांग का 20% पूरा करना, गैर-राजस्व पानी को 20% से कम करना और जल निकायों को पुनर्जीवित करना शामिल है।
- स्मार्ट तत्वों को प्रोत्साहन : हर प्रोजेक्ट में स्मार्ट तत्वों के कुछ पहलुओं को शामिल किया जाना चाहिए और अमृत 2.0 मिशन में अच्छे कायाकल्प पर एक उप-योजना भी होनी चाहिए।
- क्षमता निर्माण गतिविधियाँ : ठेकेदारों, प्लंबरों, संयंत्र संचालकों, छात्रों, महिलाओं और नागरिकों सहित सभी हितधारक क्षमता निर्माण गतिविधियों में भाग लेंगे।
- मिशन के परिणामों के मूल्यांकन में तकनीकी संस्थान शामिल होंगे।
- छात्रों के साथ गिग इकॉनमी प्रतिमान का उपयोग करते हुए परियोजनाओं और परिणामों का एक सर्वेक्षण किया जाएगा।

- सस्ती देशी मशीनरी और प्रक्रियाओं का उपयोग करके उद्यमिता और स्टार्टअप का समर्थन करना । प्रौद्योगिकी उप-मिशन नवीनतम वैश्विक प्रौद्योगिकियों का लाभ उठाने में सहायता करेगा।
- जल का समान वितरण: जल के समान वितरण, अपशिष्ट जल का पुन: उपयोग और पानी की मात्रा और गुणवत्ता के संबंध में जल निकायों के मानचित्रण के लिए शहरों में पेय जल सर्वेक्षण किया जाएगा।
- डिजिटल अर्थव्यवस्था को बढ़ावा : मिशन पेपरलेस होगा, और उन्नत तकनीकों का उपयोग करके इसका मूल्यांकन और निगरानी की जाएगी।
- कायाकल्प और शहरी परिवर्तन के लिए अटल मिशन की मुख्य विशेषताएं । Highlights of AMRUT Scheme
- AMRUT का उद्देश्य घरों में पानी की आपूर्ति, सीवरेज और शहरी परिवहन जैसी बुनियादी सेवाएं प्रदान करना और शहरों में भवन निर्माण सुविधाएं प्रदान करना है। यह सभी के लिए जीवन की गुणवत्ता में सुधार करेगा, विशेष रूप से गरीबों और वंचितों के लिए यह एक राष्ट्रीय प्राथमिकता है। अमृत के तहत पांच सौ शहरों का चयन किया गया है। अमृत के तहत चुने गए शहरों की श्रेणी नीचे सूचीबद्ध है:
- 2011 की जनगणना के अनुसार अधिसूचित नगर पालिकाओं के साथ एक लाख से अधिक आबादी वाले सभी शहर और कस्बे, छावनी बोर्ड (सिविलियन क्षेत्र) सहित
- राज्यों/संघ राज्य क्षेत्रों के सभी राजधानी शहर/कस्बें, जो ऊपर कवर नहीं किए गए हैं।
- HRIDAY योजना के तहत MoHUA द्वारा विरासत शहरों के रूप में वर्गीकृत सभी शहर / कसबे।
- 75,000 से अधिक और 1 लाख से कम आबादी वाले मुख्य नदियों के तने पर तेरह शहर और कस्बे।
- पहाड़ी राज्यों, द्वीपों और पर्यटन स्थलों से दस शहर (प्रत्येक राज्य से एक से अधिक नहीं)।
- कायाकल्प और शहरी परिवर्तन के लिए अटल मिशन के उद्देश्य । Objectives of AMRUT Mission
- नल के पानी और सीवरेज कनेक्शन तक पहुंच : यह सुनिश्चित करने के लिए कि हर घर में पानी की सुनिश्चित आपूर्ति और सीवरेज कनेक्शन के साथ नल की पहुंच हो।
- हरियाली बनाए रखना : हरियाली और अच्छी तरह से बनाए हुए खुले स्थानों (जैसे पार्क) को विकसित करके शहरों के सुख-सुविधा के मूल्य को बढ़ाना
- गैर-मोटर चालित परिवहन (जैसे चलना और साइकिल चलाना) के लिए सुविधाओं का निर्माण करके प्रदूषण में कमी ।
- सेवा स्तर बेंचमार्क (एसएलबी) की स्थापना : इन सभी परिणामों को नागरिकों, विशेष रूप से महिलाओं द्वारा महत्व दिया जाता है, और संकेतक और मानक आवास और शहरी मामलों के मंत्रालय (एमओएचयूए) द्वारा सेवा स्तर बेंचमार्क (एसएलबी) के रूप में निर्धारित किए गए हैं।
- मिशन का प्राथमिकता क्षेत्र जल आपूर्ति है जिसके बाद सीवरेज है।

अमृत मिशन के घटक I Components of AMRUT Mission

- अमृत के घटकों में क्षमता निर्माण, सुधार कार्यान्वयन, जल आपूर्ति, सीवरेज, और सेप्टेज प्रबंधन, वर्षा जल निकासी, शहरी परिवहन, और पार्कों और हरित स्थानों का विकास शामिल हैं।

अमृत मिशन के घटक		
क्र.सं.	**अवयव**	**विशेषता**
1	**जलापूर्ति**	○ मौजूदा जल आपूर्ति, जल उपचार संयंत्रों और सार्वभौमिक मीटरिंग को बढ़ाने सहित जल आपूर्ति प्रणाली। ○ उपचार संयंत्रों सहित पुरानी जल आपूर्ति प्रणालियों का पुनर्वास। ○ विशेष रूप से पेयजल आपूर्ति और भूजल के पुनर्भरण के लिए जल निकायों का कायाकल्प। ○ पानी की गुणवत्ता की समस्या (जैसे आर्सेनिक, फ्लोराइड) सहित दुर्गम क्षेत्रों, पहाड़ी और तटीय शहरों के लिए विशेष जलापूर्ति व्यवस्था
2	**मल**	○ विकेंद्रीकृत, नेटवर्क वाली भूमिगत सीवरेज प्रणाली जिसमें मौजूदा सीवरेज सिस्टम और सीवेज उपचार संयंत्रों की वृद्धि शामिल है। ○ पुरानी सीवरेज प्रणाली और उपचार संयंत्रों का पुनर्वास। ○ अपशिष्ट जल का पुन: उपयोग और लाभकारी उद्देश्यों के लिए जल का पुनर्चक्रण।
3	**चक्रवात के पानी की निकासी**	बाढ़ को कम करने और अंततः समाप्त करने के लिए, तूफानी जल निकासी प्रणालियों का निर्माण और सुधार किया जा रहा है।
4	**शहरी परिवहन**	फ़ुटपाथ/वॉकवे, फ़ुटपाथ, फ़ुट ओवर-ब्रिज, और गैर-मोटर चालित परिवहन (जैसे साइकिल) के लिए सुविधाएँ। मल्टी लेवल पार्किंग।
5	**हरित स्थान/पार्क**	युवा लोगों, बुजुर्गों और दिव्यांगों के अनुकूल घटकों के लिए अनूठी विशेषताओं के साथ हरित स्थान और पार्कों का निर्माण।

i). शहरी स्थानीय निकाय (यूएलबी) नियोजन प्रक्रिया के दौरान भौतिक अवसंरचना घटकों में कुछ स्मार्ट सुविधाओं को शामिल करने

ii). SAAP (स्टेट एनुअल एक्शन प्लान) एक समेकित योजना है जो संबंधित राज्यों में सभी प्रस्तावित AMRUT शहरों के सभी शहर-स्तरीय SLIP (सर्विस लेवल इम्प्रूवमेंट प्लान) का एक संयोजन है।

iii). MoHUA द्वारा वर्ष में एक बार SAAP को मंजूरी देकर और राज्यों को अपने दम पर परियोजनाओं को अधिकृत और अनुमोदित करने की आवश्यकता होने पर, कायाकल्प और शहरी परिवर्तन के लिए अटल मिशन ने राज्यों को परियोजना के विकास और निष्पादन में समान भागीदार बनाकर सहकारी संघवाद को साकार किया है। राज्य वार्षिक कार्य योजना प्रस्तुत करने वाला राजस्थान देश का पहला राज्य था।

****

मेरी माँ

श्रीमती सरिता कुमारी, एमटीएस
पश्चिम बंगाल व सिक्किम भू-स्थानिक निदेशालय

माँ कैसी होती है
खुश तुझे वो रखती है
अपना मारकर मन, तेरी जेबें भरती है
हां, माँ ऐसी ही होती है

नौ माह भीतर रखकर तेरी लातें सहती है
तेरी खुशियों के खातिर, वो सारे दु:ख सहती है
तेरी सलामती के लिए पूजा और व्रत रखती है
माँ ऐसी ही होती है

खुद भूखे रहकर तेरा पेट भरती है
सच्चाई-ईमानदारी और धैर्य के साथ चलती है
जैसे बाग में सुगंधित फूल खिलते हैं,
माँ वैसी ही होती है

परवरिश ही जीवन के संघर्षों से लड़ना सिखाती है
घर पर रिश्ते की सिंचाई, परिवार के महत्व को बताती है
माँ ऐसी ही होती है
हां, माँ ऐसी ही होती है

****

मानव जीवन के लिए उचित भोजन

श्री अनिरूद्ध बासु, कार्यालय अधीक्षक
पश्चिम बंगाल व सिक्किम भू-स्थानिक निदेशालय

उचित भोजन मानव जीवन के लिए आवश्यक है क्योंकि वे हमारे शरीर को बेहतर ढंग से कार्य करने के लिए आवश्यक पोषक तत्व और ऊर्जा प्रदान करते हैं। एक संतुलित आहार जिसमें सभी खाद्य समूहों से विभिन्न प्रकार के खाद्य पदार्थ शामिल हों, अच्छे स्वास्थ्य और समग्र कल्याण को प्राप्त करने की कुंजी है। पोषण के महत्व के बारे में खुद को शिक्षित करना और अपने भोजन के सेवन की बात आने पर सूचित विकल्प बनाना महत्वपूर्ण है।

उचित भोजन के प्रमुख घटकों में से एक मैक्रोन्यूट्रिएंट्स का संतुलन है, जिसमें कार्बोहाइड्रेट, प्रोटीन और वसा शामिल हैं। कार्बोहाइड्रेट शरीर की ऊर्जा का मुख्य स्रोत हैं और हमारे दैनिक कैलोरी सेवन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा होना चाहिए। प्रोटीन ऊतकों के निर्माण और मरम्मत के लिए आवश्यक है, जबकि वसा हार्मोन उत्पादन और कोशिका संरचना के लिए महत्वपूर्ण हैं। प्रत्येक भोजन में इन मैक्रोन्यूट्रिएंट्स की विविधता को शामिल करना सुनिश्चित करता है कि हमारे शरीर को ठीक से काम करने के लिए आवश्यक सभी आवश्यक पोषक तत्व मिल रहे हैं।

मैक्रोन्यूट्रिएंट्स के अलावा, विटामिन और खनिज जैसे सूक्ष्म पोषक तत्व भी समग्र स्वास्थ्य के लिए महत्वपूर्ण हैं। फलों, सब्जियों, साबुत अनाज और लीन प्रोटीन से भरपूर आहार हमें आवश्यक विटामिन और खनिज प्रदान कर सकता है जो हमारे शरीर को पनपने के लिए चाहिए। ये पोषक तत्व एक मजबूत प्रतिरक्षा प्रणाली को बनाए रखने, संज्ञानात्मक कार्य में सुधार करने और पुरानी बीमारियों को रोकने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

उचित भोजन में संपूर्ण, अप्रसंस्कृत खाद्य पदार्थ शामिल होने चाहिए जो अतिरिक्त चीनी, अस्वास्थ्यकर वसा और कृत्रिम अवयवों से मुक्त हों। प्रसंस्कृत खाद्य पदार्थों में अक्सर कैलोरी, चीनी और सोडियम की मात्रा अधिक होती है, जो वजन बढ़ाने, उच्च रक्तचाप और अन्य स्वास्थ्य समस्याओं में योगदान कर सकते हैं। फलों, सब्जियों, साबुत अनाज और लीन प्रोटीन जैसे संपूर्ण खाद्य पदार्थों को चुनकर, हम यह सुनिश्चित कर सकते हैं कि हम अपने शरीर को बिना किसी हानिकारक योजक के आवश्यक पोषक तत्व दे रहे हैं।

अंत में, ध्यानपूर्वक खाने का अभ्यास करना और अपने शरीर की भूख और तृप्ति के संकेतों को सुनना महत्वपूर्ण है। धीरे-धीरे खाना, हर निवाले का स्वाद लेना और अपने शरीर को कैसा महसूस होता है, इस पर ध्यान देना हमें ज़्यादा खाने से बचने और स्वस्थ भोजन विकल्प चुनने में मदद कर सकता है। अपने शरीर की ज़रूरतों के प्रति सजग रहकर और अपने भोजन के सेवन के बारे में सूचित निर्णय लेकर, हम यह सुनिश्चित कर सकते हैं कि हम अपने आप को उचित भोजन प्रदान कर रहे हैं जो हमारे समग्र स्वास्थ्य और कल्याण का समर्थन करता है।

अशोक के फूल

श्री काली प्रसाद मिश्रा, सर्वेक्षण सहायक (सेवानिवृत)
पश्चिम बंगाल व सिक्किम भू-स्थानिक निदेशालय

गंगा नदी के तट पर महात्मा जी बैठे थे। उनके सामने भक्तों की भारी भीड़ थी। वे बड़े ही भक्तिमय भाव से रामकथा लोगों को सुना रहे थे। लोग भी तल्लीनता से उनकी ओजस्वी वाणी का श्रवण कर रहे थे।

'जब हनुमान जी को विभीषण जी से पता चला कि सीता माता अशोक वाटिका में है, तो वे अत्यंत हर्षित हुए, मानो प्रभु का सौंपा गया कार्य अब सिद्ध हो ही गया। वे व्याकुल होकर विभीषण जी से बोले, अब मुझे अशोक वाटिका जाने का उपाय बताइए ताकि मैं शीघ्र माता सीता के दर्शन कर सकूं ।' महात्मा जी आगे बोले –

'विभीषण जी से पता पाकर जब हनुमान जी जब अशोक वाटिका में पहुंचे तो उन्होंने देखा माता सीता अत्यंत शोकग्रस्त और कहीं खोई हुई सी अशोक के पेड़ के नीचे बैठी हुई हैं। उन्होंने माता को मन ही मन प्रणाम किया और उनके पास जाने का उपाय ढूंढने लगे। तभी वहां रावण दल-बल सहित वहां आ पहुंचा। उसे देखकर हनुमान जी का क्रोध चरम सीमा को पार कर गया। उन्होंने मुट्ठी भींच लिया और क्रोध पर काबू पाने की कोशिश करने लगे। '

'उधर अशोक के सफेद पुष्पों के मध्य और सादगी की मूर्त रूप में विराज रही माता जानकी की ओर रावण बढ़ने लगा ' महात्मा जी के इन वचनों को सुनकर, भीड़ में से एक आवाज आई – 'महात्मा जी अशोक के फूल सफेद नहीं लाल थे।'

महात्मा जी को यह व्यवधान पसंद नहीं आया, थोड़े गुस्से में बोले – जी, नहीं फूल सफेद ही थे।

भीड़ में से उठकर वह व्यक्ति सामने आया, और बोला – महाराज जी, फूल तो लाल ही थे, आप गलत बोल रहे हैं।

महात्मा जी, भड़क गए – बोले एकबार बता दिया न कि अशोक के फूल सफेद थे, तो सफेद ही थे। यही सत्य है, मैं कभी असत्य नहीं बोलता और न ही मेरे गुरू की वाणी असत्य हो सकती है, इसलिए अशोक के फूल सफेद थे।

इस पर भीड़ में से उठे उस व्यक्ति थोड़े क्रोधित होकर बोले – महात्मा जी मैंने कहा न कि अशोक के फूल सफेद नहीं लाल थे। मैं भी कभी असत्य नहीं बोलता और मैंने तो अपनी आंखों से देखा है। इसलिए यही सत्य है कि अशोक के फूल लाल ही थे।

उनकी बात सुनकर वहां बैठे लोग हंसने लगे – लोग पूछने लगे, अपनी आंखों से देखा है?

तभी वह व्यक्ति अपने असली रूप में प्रकट हो गए, वो कोई और नहीं साक्षात हनुमान जी थे। वे बोले, जहां कहीं रामकथा का रसपान किया जाता है, मैं वहां उपस्थित हो जाता हूं। इसलिए मैं यहां इसीलिए उपस्थित था। सभी लोग उनके दर्शन पाकर अभिभूत हो गए और उनकी जयकार करने लगे।

महात्मा जी ने उन्हें प्रणाम किया, फिर वे बोले – हनुमान जी आपने अवश्य देखे होंगे, परंतु अशोक के फूल तो सफेद ही थे। मैं अभी भी इस बात पर अडिग हूं। हनुमान जी बोले इसका निर्णय तो केवल माता जानकी ही कर सकती हैं और वो महात्मा जी को लेकर माता जानकी के पास पहुंच गए।

माता ने दोनों की बात सुनी और हंसते हुए हनुमान जी से बोली – हनुमान, महात्मा जी सत्य कह रहे हैं, अशोक के फूल तो सफेद ही थे।

'परंतु माते, मैंने तो अपनी आंखों से प्रत्यक्ष देखा था कि अशोक के फूल लाल थे' हनुमान जी विस्मित होकर बोले।

हां, हनुमान तुम भी असत्य नहीं कह रहे हो। तुमने जब अशोक के फूल को देखा तब तुम अत्यंत क्रोध में थे और इसी कारण तुम्हें चारों ओर सभी वस्तुएं अंगारे के समान लाल दिखाई दे रही थी।

मां जानकी की बातें सुनकर हनुमान जी की शंका शांत हुई और उन्होंने महात्मा जी को प्रणाम कर उन्हें वापिस रामकथा स्थल पर ले आए।

तो प्रेम से बोलिए, सियावर रामचन्द्र की जय। जय – जय श्री सीताराम।।

****

पश्चिम बंगाल और सिक्किम राज्यों में NGP 2022 को लागू करने में इस निदेशालय का योगदान

श्री शांति दास, सर्वेक्षक
पश्चिम बंगाल व सिक्किम भू-स्थानिक निदेशालय

केंद्रीय विज्ञान और प्रौद्योगिकी राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार), प्रधानमंत्री कार्यालय, कार्मिक, लोक शिकायत, पेंशन, परमाणु ऊर्जा और अंतरिक्ष राज्य मंत्री डॉ. जितेंद्र सिंह ने 12 अक्टूबर 2023 को अत्याधुनिक नवीनतम राष्ट्रव्यापी "निरंतर परिचालन संदर्भ स्टेशन" (सीओआरएस) नेटवर्क का शुभारंभ किया। भारत के पास अब एक विश्व स्तरीय सटीक स्थान आधारित सेवा है, जो वास्तविक समय में सेंटीमीटर स्तर की स्थिति निर्धारण सेवाएं प्रदान करने में सक्षम है। सर्वे ऑफ इंडिया ने पूरे भारत में 1,000 से अधिक सीओआरएस स्टेशन स्थापित किए हैं।

पश्चिम बंगाल और सिक्किम भू-स्थानिक निदेशालय ने पश्चिम बंगाल में 38 सीओआरएस स्टेशन और सिक्किम में 4 सीओआरएस स्टेशन स्थापित किए हैं। इन्वेंट्री चेकिंग, परीक्षण पूरा हो चुका है। अब ये सभी सीओआरएस स्टेशन पूरे साल 24x365 घंटे काम कर रहे हैं। केंद्र सरकार

और राज्य सरकार के संगठन, छात्र, शोधकर्ता इन सीओआरएस की सेवा निःशुल्क प्राप्त कर रहे हैं। इसके साथ-साथ निजी कंपनियां, व्यक्तिगत पेशेवर भी विभिन्न परियोजनाओं, मानचित्रण कार्य आदि के लिए सीओआरएस का उपयोग कर रहे हैं।

इस निदेशालय द्वारा विभिन्न राज्य सरकार के अधिकारियों और कर्मचारियों को "सीओआरएस के उपयोग और अनुप्रयोग" पर प्रशिक्षण देना प्रारम्भ किया गया है। पश्चिम बंगाल सरकार के डीएलआरएस के अधिकारियों और कर्मचारियों के एक बैच का प्रशिक्षण कार्य पूर्ण हो चुका है। इसके अतिरिक्त पश्चिम बंगाल सरकार के सिंचाई और जलमार्ग विभाग के दो बैचों का प्रशिक्षण भी पूरा हो गया। इस कार्यालय ने कोलकाता के तकनीकी प्रशिक्षण संस्थान, आरएसआइजीएसटी और एसएआईएआरडी के छात्रों और संकायों को भी प्रशिक्षण प्रदान किया है।

इस कार्यालय में पूरे वर्ष विभिन्न अवसरों पर विभिन्न प्रदर्शनियों / कार्यशालाओं का आयोजन किया गया है। श्री उदय शंकर प्रसाद, निदेशक, श्री देबब्रत पालित, अधीक्षण सर्वेक्षक, श्री राहुल शर्मा, उप अधीक्षण सर्वेक्षक और इस निदेशालय के अन्य अधिकारी सीओआरएस और एनजीपी-2022 का प्रदर्शन करने के लिए इन प्रदर्शनी / कार्यशाला में शामिल हुए।

पश्चिम बंगाल और सिक्किम भू-स्थानिक निदेशालय, अंतरराष्ट्रीय स्तर से लेकर ग्रामीण स्तर तक की प्रशासनिक सीमाओं के सामंजस्य का काम करता है, जो एक महत्वपूर्ण कार्य है जिसे एनजीपी-2022 के अंतर्गत विभाग को सौंपा गया था। सबसे पहले इस निदेशालय ने ORGI के सहयोग से पश्चिम बंगाल और सिक्किम राज्यों के गांवों, उप-जिलों, जिलों की सीमाओं का प्रशासनिक सीमा डेटाबेस (ABDB) तैयार किया।

हमने इस ABDB के साथ पश्चिम बंगाल और सिक्किम के साथ अंतरराष्ट्रीय सीमाओं के सामंजस्य को पूरा कर लिया है। ABDB के साथ पश्चिम बंगाल और सिक्किम राज्यों में नगर पालिका / नगर निगम / अधिसूचित क्षेत्र / औद्योगिक टाउनशिप की बाहरी सीमाओं और वार्ड सीमाओं का सामंजस्य प्रगति पर है। स्थान के साथ भौगोलिक नामों का संग्रह और स्थानीय लोगों के स्थानीय भाषाओं में उच्चारण के ऑडियो बाइट्स और टोपोनॉमी के तहत परिष्कृत भौगोलिक नाम डेटाबेस (GNDB) तैयार करना विभाग का एक और कार्य है। वर्ष 2024-25 में 11 लाख से अधिक अनुपयोगी मानचित्रों/अभिलेखों को हटाया गया है। इस वर्ष हजारों विभिन्न प्रकार के पुराने अप्रतिबंधित मानचित्र, विभिन्न विद्यालयों, महाविद्यालयों, विश्वविद्यालयों को पूर्णतः निःशुल्क वितरित किए गए हैं। यह कार्यालय पश्चिम बंगाल और सिक्किम राज्यों में स्थित जी.टी. टावर्स, सीओआरएस, जी.सी.पी. पिल्लर्स, स्टैण्डर्ड बेंच मार्क्स (एस.बी.एम.) आदि प्रतिष्ठानों को जियोडेटिक रेफरेंस फ्रेम (जी.आर.एफ.) के अंतर्गत बनाए रखने की पहल भी करता है।

फील्ड टीम वर्तमान में पश्चिम बंगाल में निरीक्षण कार्य कर रही है। पश्चिम बंगाल और सिक्किम के सभी जी.आर.एफ. प्रतिष्ठानों का निरीक्षण कार्य मार्च, 2025 तक पूरा कर लिया जाएगा। यह निदेशालय त्रिपुरा और मिजोरम सेक्टर के लिए भारत और बांग्लादेश के बीच संयुक्त अंतर्राष्ट्रीय सीमा सीमांकन कार्य में भी निरंतर लगा हुआ है।

इस प्रकार हमारा निदेशालय सतत समर्पित भाव से देश की सेवा में संलग्न है।

****

भावना गाजी

श्री स्वपन कुमार सरकार, कार्यालय अधीक्षक
पश्चिम बंगाल व सिक्किम भू-स्थानिक निदेशालय

एक चाय के दुकान पर इकट्ठा होकर कुछ युवा लोग हाथ में बीड़ी फूंकते हुए बात-चीत कर रहे थे तो कुछ नौजवान चाय की चुश्कियां लेते हुए बात-चीत का आनंद ले रहे थे। तभी हमारे चहेते पगला साधू का आगमन हुआ। कुछ शरारती युवा दादू के मुख पर बीड़ी का धुँआ छोड़ते हुए हँस रहे थे। दादू अपने गुस्से को संभालते हुए दुकानदार से एक प्याली चाय की मांग की और उन युवा लोगों के पास बैठते हुए शांत दिमाग से बोले – ' तुम लोग अभी नादान हो। तुमलोग देश के लिए क्या कर सकते हो? देश को आगे बढ़ाने के लिए क्या कर रहे हो?' सबलोग दादू को बोलते हुए पाकर खुशी से चिल्ला उठे। दादू बहुत कम बोलते थे लेकिन जब बोलते थे तो अपने बातों से सामने वाले को चित्त कर देते थे। आज भी उनको बोलता देख सभी उत्साहित हो गए और दादू से जिद करने लगे कि एक देश भक्ति की कहानी सुनाओ। दादू मान गए, उन्होंने बोलना शुरू किया-

'तुम लोग भावना गाजी का नाम सुना है?'

सभी एक साथ चिल्लाते हुए बोले- नहीं, आप कहां से ऐसा-ऐसा अजीब नाम लेकर आ जाते हैं।

दादू ने आगे बोलना शुरू किया-

' हमारे इसी बंगाल की धरती पर जन्म हुआ था श्री भवतोष गायेन उर्फ भावना गाजी का। इस नाम से अंगरेज लोग डरता था। वह अंग्रेज /जमींदार लोग का धन लूट कर गरीब और कमजोर लोगों में बांटता था। भावना गाजी का आशियाना था बांग्लार बाघ सर आशुतोष मुखर्जी का पैत्रिक निवास के समीप कालीतला नामक स्थान पर। जहां पर माँ गंगा कल-कल रूप से बहती थी। उनका दो कुल में हरा-भरा शस्य श्यामल खेत में फसलें लहलहाती थी। चारों ओर पक्षियों की गुंजन वातावरण में मधुर संगीत पैदा करती थी। पर इसके बावजूद वहां जाने में अंग्रेज खौफ खाते थे।

यह कहानी आज से बहुत साल पहले की है। उन दिनों अंग्रेज लोग गरीब किसानों पर ढेरों अत्याचार करते थे। यह कहानी शुरू होती है एक छोटे से गाँव से। भवतोष के गाँव से, वह पढ़ाई-लिखाई, खेल-कूद सब में अव्वल था। 16-17 साल की उम्र में ही भवतोष ने कबड्डी के खेल में अंग्रेजों का हालत खराब कर दिया था। वे लोग गुस्से में भवतोष को मारने भी आ गए थे। एक बार भवतोष मामा के घर गया। वहां उसने पहली बार फुटबॉल खेलते हुए अंग्रेजों को देखा। उसे बहुत पसंद आया। वह घर आकर धान के पौधे से गोलक (गेंद) बनाकर फुटबॉल खेलना प्रारंभ किया। गाँव के पंडित (शिक्षक) उसे डांटते कि पढाई – लिखाई छोड़कर वह सिर्फ खेल-कूद में अपना समय नष्ट कर रहा है। लेकिन वह अपने धुन का पक्का था, एक बार जो भावना मन में बैठ गयी, उसे पूरा करके रहता था। उसने इस खेल के नियम सीखने की ठानी। वह चर्च के फादर के पास गया जिन्होंने उसे इस खेल के सारे नियम सिखलाया। तब से वह अपने साथियों का एक दल बनाकर फुटबॉल का खेल का अभ्यास शुरू किया। तभी से वह अपने साथियों में भावना गाजी के नाम से प्रसिद्ध हो गया। उसने दल को मंत्र दिया-

कदम बढ़ाए चल
बाहु में आना बल
हमें करना है जय
गाँव का करना है विजय
गोरा लोक का नहीं करना भय
हमीं होंगे जय निश्चय।

श्वेतोश्विनी माँ गंगा के निकट एक मैदान में अंग्रेज एवं बंगाली नौजवानों के मध्य फुटबॉल का खेल प्रारंभ हुआ। आस-पास के 8-10 गाँव के लोग एकजुट हुए थे। नदी के शांत वातावरण ने एक रमणीय माहौल तैयार किया था। भीड़ देखकर कहीं किसी ने बादाम का ठेला लगा लिया था तो कहीं कोई घुघनी बेच रहा था। खेल शुरू होने से पहले चमड़े का बूट पहनकर 11 अंग्रेज खिलाड़ी हाजिर हुआ। परंतु बंगाली नौजवान तो नंगे पैर थे। बेशक उनके पैरों में चमड़े के बूट नहीं थे, परंतु उनके पैर अंग्रेजों की अत्याचार के विरूद्ध चोट करने को तत्पर थे। खेल का मैदान चौकोर था। दोनों दिशा में तेकाठी (गोलपोस्ट) था। उसके नीचे एक खिलाड़ी था जिसको गोलकीपर बोला जाता था। चमड़े से बनी गोलक (गेंद) को मैदान के मध्य में रखा गया। काला-कुर्ता पहनकर एक-एक अंग्रेज विचारक मुंह में बंशी लेकर खड़ा था। उसने घड़ी में समय देखा और बंशी में फूंक मारकर खेला शुरू कर दिया। गोलक को पैर से मारकर एक-एक अंग्रेज खिलाड़ी भाग रहा था। बंगाली नौजवान उससे गोलक लेने का प्रयास कर रहा था। जॉनसन ने हडसन को गोलक दिया, हडसन ने गोलक को पैर से उछाला, अबकी भावना ने उसे सीने पर लिया और उसे हरू को दिया। हरू ने नारू को पास किया और नारू ने फिर से भावना को दिया। अबकी भावना ने किक लगाई और सीधा गोलक तेकाठी में। सब चिल्ला उठे- गोल..............! लेकिन विचारक महोदय ने गोल को रद्द करते हुए बंशी को फूंक दिया। भावना के इस तेजी को देखकर जॉनसन को गुस्सा आ गया। उसने गोलक को जोर से लात मारी, गोलक सीधा किलसन के पास गिरा, किलसन ने हडसन को दिया। हडसन ने तेकाठी की ओर फेंका पर गोविन्द (गोलकीपर) ने गोलक को हाथ में पकड़ लिया।

अबकी गोलक सत्तो के पास आया, सत्तो ने भज्जो को दिया, भज्जो ने भावना को दिया और भावना ने फिर से गोलक सीधा तेकाठी में डाल दिया। अंग्रेज इसपर तिलमिला उठे। उन्होंने फिर से मारपीट करना शुरू कर दिया। अबकी अंग्रेजों का अत्याचार सहने की शक्ति भावना में नहीं थी। सभी ने मिलकर अंग्रेजों को मारपीट कर परास्त कर दिया। तभी पुलिस आ गई। सभी 15 बंगाली नौजवान गंगा में कूद कर दूर निकल गए। तभी से प्रसिद्ध हो गया कि भावना गाजी को पकड़ना मुश्किल ही नहीं नामुमकिन है। अब वह अपने दल के साथ अंग्रेजों को लोहे के चनें चबाने पर मजबूर कर रहा था।'

दादू की चाय खत्म हो चुकी थी और उनकी कहानी भी।

****

कब्ज से राहत कैसे पाएं

श्री अनिरूद्ध बासु, कार्यालय अधीक्षक
पश्चिम बंगाल व सिक्किम भू-स्थानिक निदेशालय

कब्ज एक आम पाचन समस्या है जो कई व्यक्तियों को प्रभावित करती है, जिससे असुविधा और असुविधा होती है। यह मल त्याग में कठिनाई या अनियमितता की विशेषता है, जिससे अक्सर असुविधा, सूजन और पेट भरा होने का एहसास होता है। जबकि कभी-कभार कब्ज होना सामान्य हो सकता है, पुरानी कब्ज अंतर्निहित स्वास्थ्य समस्याओं का संकेत हो सकती है और इसका तुरंत समाधान किया जाना चाहिए। सौभाग्य से, कई प्रभावी रणनीतियाँ हैं जो व्यक्तियों को कब्ज से राहत पाने और उनके समग्र पाचन स्वास्थ्य को बेहतर बनाने में मदद कर सकती हैं।

कब्ज को कम करने के सबसे प्रभावी तरीकों में से एक आहार में फाइबर का सेवन बढ़ाना है। फाइबर मल को बड़ा करने और नियमित मल त्याग को बढ़ावा देने में मदद करता है। फाइबर से भरपूर खाद्य पदार्थों में फल, सब्जियाँ, साबुत अनाज और फलियाँ शामिल हैं। सूजन और असुविधा से बचने के लिए धीरे-धीरे फाइबर का सेवन बढ़ाने की सलाह दी जाती है। इसके अतिरिक्त, उचित पाचन और आंत्र समारोह के लिए पर्याप्त मात्रा में पानी पीना आवश्यक है। निर्जलीकरण कब्ज को बढ़ा सकता है, इसलिए नियमितता बनाए रखने के लिए हाइड्रेटेड रहना महत्वपूर्ण है।

नियमित शारीरिक गतिविधि भी नियमित मल त्याग को बढ़ावा देने और कब्ज से राहत दिलाने में मदद कर सकती है। व्यायाम पाचन तंत्र को उत्तेजित करने और बृहदान्त्र के माध्यम से अपशिष्ट की गति को बढ़ावा देने में मदद करता है। सप्ताह के अधिकांश दिनों में कम से कम 30 मिनट तक मध्यम व्यायाम जैसे कि टहलना, जॉगिंग या बाइक चलाना करने का लक्ष्य रखें। इसके अतिरिक्त, मल त्याग के लिए एक नियमित दिनचर्या स्थापित करने से शरीर को अधिक सुसंगत और कुशल मल त्याग करने के लिए प्रशिक्षित करने में मदद मिल सकती है। हर दिन बाथरूम का उपयोग करने के लिए समय निकालने की कोशिश करें और जाने की इच्छा को टालने से बचें।

आहार और जीवनशैली में बदलाव के अलावा, कई ओवर-द-काउंटर दवाएं और प्राकृतिक उपचार हैं जो कब्ज को कम करने में मदद कर सकते हैं। फाइबर सप्लीमेंट, जैसे कि साइलियम हस्क या मिथाइलसेलुलोज, फाइबर का सेवन बढ़ाने और नियमित मल त्याग को बढ़ावा देने में मदद कर सकते हैं। डॉक्यूसेट सोडियम जैसे स्टूल सॉफ़्नर मल को नरम करने और इसे पास करना आसान बनाने में मदद कर सकते हैं। मैग्नीशियम साइट्रेट या सेन्ना जैसे जुलाब, गंभीर कब्ज के मामलों में मल त्याग को उत्तेजित करने में मदद कर सकते हैं। हालांकि, इन दवाओं का उपयोग सावधानी से और एक स्वास्थ्य देखभाल पेशेवर के मार्गदर्शन में करना महत्वपूर्ण है, क्योंकि इनके

दुष्प्रभाव हो सकते हैं और इनका लंबे समय तक उपयोग नहीं किया जाना चाहिए। यदि आहार और जीवनशैली में बदलाव के बावजूद कब्ज बनी रहती है, तो आगे के मूल्यांकन और उपचार के लिए स्वास्थ्य सेवा पेशेवर से परामर्श करना महत्वपूर्ण है। क्रोनिक कब्ज अंतर्निहित स्वास्थ्य समस्याओं का लक्षण हो सकता है, जैसे कि चिड़चिड़ा आंत्र सिंड्रोम, हाइपोथायरायडिज्म, या बृहदान्त्र अवरोध, जिसके लिए चिकित्सा हस्तक्षेप की आवश्यकता हो सकती है। कुछ मामलों में, कब्ज के अंतर्निहित कारण को संबोधित करने और राहत प्रदान करने के लिए प्रिस्क्रिप्शन दवाएँ या प्रक्रियाएँ आवश्यक हो सकती हैं। कब्ज के प्रबंधन के लिए एक सक्रिय दृष्टिकोण अपनाने और ज़रूरत पड़ने पर उचित चिकित्सा देखभाल प्राप्त करने से, व्यक्ति इस आम पाचन समस्या से राहत पा सकते हैं और अपने जीवन की समग्र गुणवत्ता में सुधार कर सकते हैं।

****

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का उदय: निहितार्थ और अनुप्रयोग

श्री गौतम आनन्द, सर्वेक्षक
पश्चिम बंगाल व सिक्किम भू-स्थानिक निदेशालय

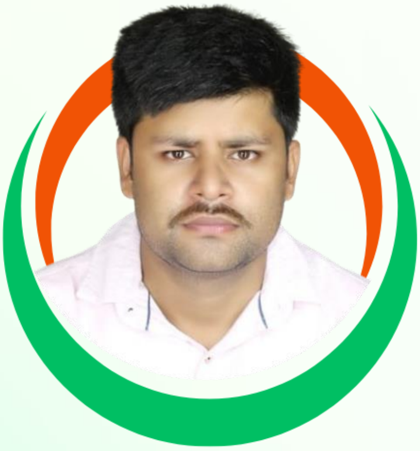

परिचय

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (ए.आई.) एक उभरती हुई तकनीक है, जिसने पिछले एक दशक में तेजी से विकास किया है। यह ना सिर्फ हमारे जीवन को प्रभावित कर रहा है, बल्कि विभिन्न उद्योगों में भी अपने अनुप्रयोग के माध्यम से महत्वपूर्ण परिवर्तन ला रहा है। हाल ही में आयोजित 33वें भारत आर्थिक शिखर सम्मेलन में एआई जैसी उभरती रणनीति पर नवाचार, उद्यमशीलता, बुनियादी ढाँचा और कौशल विकास की चुनौतियाँ पर गंभीर चर्चा हुई।

1. **दक्षता और उत्पादकता बढाना**

एआई का सबसे महत्वपूर्ण प्रभाव उद्योग में दक्षता और उत्पादकता को बढ़ाने में है। स्वाचलन के लिए, यह दोहराए जाने वाले कार्यों को तेजी से और अधिक सहायता के साथ पूरा करता है। उदाहरण के लिए, निर्माण क्षेत्र में एआई ने उत्पादन प्रक्रिया को सुव्यवस्थित किया है, जिसमें समय और लागत की बचत होती है। व्यवसायिक क्षेत्र में, ग्राहक सेवा में एआई चैटबॉट का उपयोग ग्राहक को तुरंत सहायता प्रदान करने में मदद कर रहा है, जिससे ग्राहक संतोष में वृद्धि होती है।

2. **स्वास्थ्य क्षेत्र में**

एआइ स्वास्थ्य देखभाल के क्षेत्र में क्रांति ला रहा है। यह रोगी रिकॉर्ड, प्रयोगशाला परिणाम और चिकित्सा छवि का विश्लेषण करके सही निदान और उपचार योजना बनाने में मदद करता है। ख़ासकर ग्रामीण इलाकों में, जहां स्वास्थ्य देखभाल सुविधाएं तक पहुंच गई है, एआई की सहायता से बीमारियों का पता लगाना, निदान करना और संभावित महामारी की प्रारंभिक पहचान की जा रही है। इसके अलावा, एआई द्वारा संचार स्वास्थ्य सलाहकार और वर्चुअल असिस्टेंट रोगी को व्यक्तिगत सलाह प्रदान कर रहे हैं।

3. **रोजगार पर प्रभाव**

हलांकि एआइ नई संभावनाएँ प्रस्तुत करता है, यह मौजूदा नौकरियों के लिए भी चुनौती बन सकता है। रिपोर्टों के अनुसार, एआई के आने से वकील, डॉक्टर, इंजीनियर और शिक्षक जैसे पेशेवरों के काम की प्रकृति बदलने की संभावना है। आने वाले वर्षों में, अनुमान है कि एआई विश्व अर्थव्यवस्था में 15.7 खराब डॉलर का योगदान देगा, और कई मौजूदा नौकरियाँ प्रभावित होंगी। भारत के 90 प्रतिशत कर्मचारी असंगठित क्षेत्र में काम करते हैं, और ऐसे में एआई से उत्पन्न आर्थिक उथल-पुथल का वे शिकार बन सकते हैं।

4. **उच्च कौशल वाली नौकरी का उपहार**

हाल के आँकड़ों के अनुसार, उच्च कौशल वाली नौकरियों की संख्या में इज़ाफ़ा होगा। हलांकि, कुछ नौकरियों का खतरा है, लेकिन एआई, वर्चुअल रियलिटी, इंटरनेट ऑफ थिंग्स, और क्लाउड कंप्यूटिंग जैसे क्षेत्रों में नए अवसर भी उत्पन्न होंगे। भारत की डिजिटल अर्थव्यवस्था 2023 तक एक खराब डॉलर तक पहुंचने की संभावना है। इसके लिए, भारत को शिक्षा प्रणाली में व्यापक बदलाव करने होंगे ताकि कौशल आधारित शिक्षा को बढ़ावा दिया जा सके।

5. **नैतिक विचार और भविष्य की चुनौतियाँ**

एआइ के उदय के साथ-साथ नैतिक विचार भी उठते हैं। डेटा गोपनीयता, एल्गोरिदम में पूर्वाग्रह, और रोजगार पर प्रभाव जैसे मुद्दों को सक्रियता से संभालने की आवश्यकता है। रोबोट के उपयोग से सम्बंधित "रोबोट के लिए जॉब परमिट" जैसे उपाय पर विचार करना अवसर हो सकता है, ताकि रोबोट की नौकरी पर प्रभाव को कम किया जा सके। इसके अलावा, हमें यह सुनिश्चित करना होगा कि एआई सिस्टम निष्पाक्स और पारदृष्टि हो।

6. **तकनीकी क्षेत्रों में अवसर**

आने वाले वर्षों में, एआई, वर्चुअल रियलिटी, इंटरनेट ऑफ थिंग्स, बिग डेटा एनालिसिस, और क्लाउड कंप्यूटिंग जैसी तकनीकी क्षेत्र में रोजगार के लाखों मौके पैदा होंगे। लेकिन इसके लिए भारत को तीन प्रमुख चुनौतियाँ का सामना करना होगा:

ज्ञान आधारित अर्थव्यवस्था: भारत को एक ज्ञान आधारित अर्थव्यवस्थ में रूपान्तरण करने के लिए शिक्षा के बुनियादि ढांचे में व्यापार निवेश करना होगा।

रोबोट की चुनौती: रोबोट के रोजगार को छीनने के लिए, कंपनियों पर 'रोबोट के लिए जॉब परमिट' का शुल्क लगाया जा सकता है।

तकनीकी बदलाव: हमें तकनीकी बदलाव और नवाचार के साथ-साथ सहमति स्थापित करने की आवश्यकता है, जिसे हम चौथी औद्योगिक क्रांति की चुनौतियों का सामना कर सकें।

निष्कर्ष

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का उदय न सिर्फ उद्योगों को प्रभावित कर रहा है, बल्कि हमारे जीवन के हर पहलू में बदलाव ला रहा है। इसके निहितार्थ और अनुप्रयोग का दायरा व्यापक है, लेकिन इसके नैतिक निहितार्थ पर ध्यान देना भी अवसर है। अगर भारत एआई की संभावनाओं का सही दिशा में लाभ उठाने में सक्षम होता है, तो यह ना सिर्फ रोजगार के नए आयाम खोलेगा, बल्कि एक समृद्ध और निष्पक्ष भविष्य की ओर बढ़ने में भी मदद करेगा। अब यह हमारी ज़िम्मेदारी है कि हम एआइ के विकास को समाज के लाभ के लिए आकार दें।

****

लिडार - एक नई तकनीक

श्री प्रलय कुमार दास, अधिकारी सर्वेक्षक
पश्चिम बंगाल व सिक्किम भू-स्थानिक निदेशालय

परिचय:

लिडार एक संक्षिप्त शब्द है जो कई शब्दों के मिलने से बना है, अर्थात Li -light, d – detection and r – ranging I यह एक लेजर किरणों पर आधारित तकनीक है। इसमें आसमान आधारित या जमीन आधारित एक यंत्र होता है जो लेजर किरण उत्पादित और प्रक्षेपित करने का कार्य करती है। यह लेजर किरणें बहुत त्वरीत एवं सघन रूप में उत्पादित होती हैं, जिन्हें भूतल (टोपोग्राफिकल सरफेस) पर प्रक्षेपित किया जाता (भारतीय सर्वेक्षण विभाग के नजरिए से) है अथवा जमीन आधारित प्रक्षेपक से उन किरणों को खासकर मकान के दीवारों पर तथा सड़कों के किनारे बने अन्य आकृतियों पर प्रक्षेपित किया जाता है। लिडार कृत्रिम बुद्धिमत्ता के क्षेत्र में केवल त्वरित एवं सटीक दूरी मापन के लिए प्रयोग में लाया जाता है। यह लेजर किरणें अपने सामने उपस्थित सतह से टकराकर वापस उसी यंत्र पर पहुंचती है जहां एक संवेदक भी उपस्थित रहता है। यह संवेदक लौटी किरणों को पहचान कर और प्रक्षेपण से लेकर वापसी तक के व्यतीत समय को मापती है। लेजर किरण प्रकाश की गति से तैरती हैं। अतः उनके द्वारा प्रक्षेपण से लेकर संवेदक तक वापस लौट में व्यतीत समय के आधार पर जिस वस्तु से टकराकर लौटी है, उसकी दूरी का सही-सही पता लगाया जा सकता है।

d= c x t/2, जहां पर, d = दूरी

t = व्यतीत समय (आने एवं जाने का अतः एक तरफ से यात्रा का समय = t /2)

C = प्रकाश करने की गति =3 x 10 8 m /sec

यह सही है कि प्रत्येक किरण पूर्ण रूप से उदग्र दिशा में प्रक्षेपित नहीं की जाती है बल्कि प्रक्षेपक से निकलकर यह किरणे शंकु आकार रूप से अपने टारगेट पर पड़ती हैं। पूर्व निर्धारित गणना के आधार पर उदग्र से उनका कोण ϴ (थीटा) का मापन हो जाता है और दूरी इस प्रकार से निकल जाती है –

d = c x (t/2) × sin(θ), एवं

x को-अर्डिनेट = d × cos(θ) × cos(ϕ)
y को-ऑर्डिनेट = d × cos(θ) × sin(ϕ), d = दूरि
z को-ऑर्डिनेट = d × sin(θ),
(θ = Angle of incidence, measured by the LiDAR sensor)
(ϕ = Angle of azimuth, measured by the LiDAR sensor)

लिडार के सिद्धांत – लिडार भी रडार के ही सिद्धांतों पर काम करता है। यह बहुत ही साधारण बात है। लेजर की किरणें टारगेट के ऊपर प्रक्षेपित करना, उसके वापस आने पर पहचान करना और विलंबित समय को माप लेना। यह विलंबित समय से दूरी का पता करना। लिडार प्रक्षेपक बहुत बड़ी संख्या में और त्वरित गति से लेजर के पल्स प्रक्षेपित करते हैं, 2,40,000 पल्सेस प्रति सेकंड या इससे भी बहुत अधिक। चुंकि लेजर की तरंगदैर्ध्य बहुत कम होती है अतः यह छोटी सी छोटी वस्तु यानी अर्थात धूलकण बादल इत्यादि को भी बहुत ही अधिक सक्षमता से माप सकती है जिससे इसकी सटीकता और बढ़ जाती है । एक अन्य विशेषता यह है कि यह एक से अधिक हिस्सों में अलग-अलग सतह से टकराकर वापस हो सकती है जिसे मल्टीपल रिटर्न कहा जाता है, के कारण विभिन्न वस्तुओं की के अलग-अलग हिस्सों की सही प्रकार से ऊंचाइयों का पता लगा सकती है । मल्टीप्ल रिफ्लेक्शन के वजह से प्राप्त कई बार व्यतीत समय के आधार पर लीडर के द्वारा अलग-अलग चीजे जैसे भवन, पेड़, छोटे पौधे की सतह आदि की ऊंचाइयों को सही-सही मापा जा सकता है ।

एक सामान्य लिडार प्रणाली

अलग-अलग उपयोगी में लिडार का प्रयोग सन 1960 के बाद से शुरू हो गया था पर सर्वेक्षण के क्षेत्र में इसका प्रारंभ काईनेमैटिक जीपीएस और आई एम यू (इनर्टियल मेजरमेंट यूनिट roll, pitch and heading ओर yaw) के उद्भव के साथ ही हो पाया है अर्थात 1980 के बाद।

लिडार के विभिन्न भागों का रेखाचित्र

लिडार के प्रक्षेपक/ संवेदक से पृथ्वी के सतह के विभिन्न आयामों की दूरी लडार के सिद्धांत से मापी जाते हैं पर लिडार के द्वारा प्रक्षेपण का सही स्थान तथा दिशा जीपीएस के द्वारा और आईएमयू के द्वारा तय किया जाता है। वर्तमान में जीपीएस की पीपीके (पोस्ट प्रोसैस्ड किनेमैटिक्स) मेथड के द्वारा स्थिति का निर्धारण होता है, एवं संवेदक के दिशा में हुए छोटे या बड़े परिवर्तन का निर्धारण आईएमयू के द्वारा होता है। यह तीन विमा की दिशा में रोल पिच एवं याव के माध्यम से निर्देशित करता है। मूल रूप में इन तीनों के सहयोग से भू आधारित किसी आयाम की त्रीविमीय निर्देशान्क निर्धारित की जाती है। लेजर किरणों की सघनता के कारण प्रत्येक एक वर्ग मीटर क्षेत्र में करीब 90 से 100 तक बिंदुओं के त्रीविमीय निर्देशान्क उपलब्ध हो जाते हैं। इस प्रकार के सभी विंदुओ को point cloud कहा जाता है जो मानचित्रण से लेकर विभिन्न प्रकार की विवेचनाओं के काम आते हैं। मानचित्रण के लिए विशेष रूप से 1064 नैनोमीटर तरंगदैर्ध्य एवं समुद्री सतह की कान्टूरिंग के लिए 532 नैनोमीटर तरंगदैर्ध्य (नीला एवं हरा) की लेजर किरणों को उपयोग में लाई जाती हैं।

लिडार के उपयोग:

सर्वेक्षण एवं मानचित्रण: सर्वेक्षण एवं मानचित्रण के क्षेत्र में लेजर किरणों के द्वारा दूरी, जीएनएसएस के द्वारा त्रीविमीय निर्देशान्क, आई एम यू के द्वारा करेक्ट पोजिशनिंग के मदद से किसी भी बिंदु का 3D

रेफरेंस निर्देशान्क बहुत सटीकता से, त्वरित गति से एवं बड़े पैमाने पर आसानी से होता है, जिसके कारण लिडार सर्वेक्षण एवं मानचित्रण के क्षेत्र में तेजी से लोकप्रिय हो रहा है।

वनों के रखरखाव में: लिडार के मदद से वनों का घनत्व,, पेड़ों की ऊंचाई पेड़ों के तनों की ऊंचाई एवं मोटाई, झाड़ियां इत्यादि का सही अनुमान सटीकता से लगाया /मापा जा सकता है। जिसके आधार पर आगे की रणनीति तैयार करने और सही वन प्रबंधन में मदद होता है।

वनों के आग की रोकथाम एवं प्रबंधन: लिडार के द्वारा मानचित्रण कर वनों में आग लगने की संभावित क्षेत्रों को पता लगाया जा सकता है। इसे fuel mapping भी कहा जाता है और इस प्रकार से तैयार model को fire behaviour model को कहां जाता है। इससे आग की रोकथाम मे मदद मिलती है।

नदियों के सर्वेक्षण में: (जल में प्रक्षेपित हो सकने लेजर की किरणें - हरा रंग) 523 नैनो मीटर पर कार्य करने वाली लेजर की किरणें करने को लिडार से प्रक्षेपित करके नदियों की गहराई, सतह का अध्ययन, प्रवाह की शक्ति का अध्ययन, नदी की चौड़ाई आदि का आसानी से अध्ययन किया जा सकता है, जो नदी जल अभियांत्रिकी में काफी सहायक है। इसी प्रकार समुद्री किनारो का भी अध्ययन किया जा सकता है।

ट्रांसपोर्ट प्रबंधन: सड़क/ रेल बनाने और इसके रखरखाव के संबंध में लिडार का व्यापक उपयोग हो रहा है।

पुरातत्वों की खोज में लिडार का व्यापक उपयोग की सम्भावना है।

ग्लेशियर/ ज्वालामुखी का अध्ययन: ग्लेशियर का आयतन निकालना एवं उसमें बदलाव मापने में व्यापक उपयोग की सम्भावना है और लिडार का व्यापक उपयोग हो रहा है।

****

छोटी सी यादें

श्री रूप कुमार दास, अधिकारी सर्वेक्षक
पश्चिम बंगाल व सिक्किम भू-स्थानिक निदेशालय

18वां अंटार्कटिका अभियान का पाँचवां दिवस का सुबह में हम लोगों का जहाज zero degree लैटिट्यूड मतलब मरिडीअन में पहुंच गये थे। इस घटना का मनाने के लिये एक अनुष्ठान हुआ था, जहाज का डेक में सभी एक्स्पिडिशन मेम्बर को उस अनुष्ठान मे भाग लेना आवश्यक था। लीडर अजय धर साहब खुद अनुष्ठान को एंकरिंग कर रहे थे। एक राजा और एक रानी बनाया गया था। जीएसआई का गौड़ साहब को राजा बनाया गया था और नैशनल हाइड्रोग्राफी के साइंटिस्ट सारण साहब को रानी बनाया गया था। दोनों ही बहुत सारा कलरफूल ड्रेस में आए थे, हम सभी मेम्बर्स वहां पर उपस्थित थे।

सब से पहले धर साहब ने इस अनुष्ठान के बारे में बताया कि समुंदर का राजा नेपचुन ने ये आदेश दिया था कि जब भी कोई Northern Hemisphere का पापी आदमी Southern Hemisphere में आएगा तो उसको पाप मुक्त करके आना पड़ेगा क्योंकि Southern

Hemisphere का आदमी को शुद्ध माना जाता है। इसका मतलब था कि हम सबको पापी माना गया और सभी को शुद्ध करना है। यह काम राजा-रानी करेंगे। दोनों जो भी काम करेने बोलेंगे वही काम हम लोगों को करना होगा। कोई कुछ पूछ नहीं पायेगा।

हम लोग बंदी के समान खड़े थे। डेक के साइड पर एक पानी का टैंक बनाया गया था जिसमें समन्दर का साल्टी पानी भरा गया था। एक-एक करके लोग बुलाये जा रहे थे। एक सिपाही थे उन्होंने बंदी के बारे मे कह रहे थे, कहां से आ रहे है, किस काम के लिए जा रहे हैं मतलब पूरा बायोडाटा देना पर रहा था। तब राजा साहब, रानी साहिबा से पूछ रहे थे कि इसको क्या सजा मिलना चाहिए। किसी को टंकी का साल्टी वाटर मे डूबने को कहा जा रहा था तो किसी को गर्म डेक में रोल करने के लिये और किसी को आपस मे कुश्ती करने के लिये बोला जा रहा था। राजा का आदेश का पालन करना जरूरी था। ना करने से सब मिलकर उसे पिटाई करना था।

जब मेरी बारी आई तो मुझे बोला गया कि आप बंगाल से आए हो, वो गोवा से बहुत दूर है इस लिये आपको दो सजा दिया जा रहा है, पहले पानी मे 10 मिनट रहना है और बाद में गर्म डेक में रोल करना है और आखिर में राजा के पास जाकर माफी मांगना है " राजा साहब माने नॉर्थ से साउथ आए और कोई भी गलत काम नहीं करेंगे, कोई ऐसा काम नहीं करेंगे जिससे कि दक्षिण दिशा में पाप आए ।

हमारे साथ तीन महिला सदस्या भी थी, दो डॉक्टर मैम और एक IIG के डायरेक्टर मैडम थीं। वो तीनों को झारू लगाने के लिये कहा गया। सबको दंड मिलने के बाद खुला डेक में लंच का व्यवस्था किया गया था। समुन्दर का ठंढा हवा में और साल्टी वाटर में शरीर में जलन हो रहा था। उसी हालत में हम लोग सब मिलकर खाना खाया।

इस अभियान में बहुत-सी छोटी-बड़ी कहानी है जो कि अच्छी याद बनकर दिल में बसे हुए हैं।

****

श्री श्री शंकराचार्य

श्री सुभास चन्द्र साँतरा, मानचित्रकार डिवि.।
पश्चिम बंगाल व सिक्किम भू-स्थानिक निदेशालय

शंकराचार्य का जन्म 688 में केरल के कलादी गाँव में एक गरीब मलायाली ब्राम्हन परिवार में हुआ था। उनके पिता का नाम शिबगुरु था जो कि शास्त्रों में प्रवीण थे और माता का नाम बिशीसठा देबी था। उनके कार्यों के अनुसार बिसिठा अद्वैताबादी माने जाते हैं परन्तु शीब मानस स्तुति की रचना की गई हैं जिससे यह सिद्ध होता हैं और शीब के उपासक थीं। इसी के साथ ही उन्होंने जीर्णोद्धार के लिए भी कार्य किया था। केदारनाथ में ही उन्होंने समाधी ली थी।

शंकराचार्य उज्ज्वल चरित्र के सच्चे सन्यासी थे , जिन्होंने अनेक ग्रन्थों की रचना की। 32 बर्स की आयु में उनका देहाबसान हो गया उनका अंतिम उपदेश था "हे मानबटू स्वयं को पहचान, स्वयं को पहचाने के बाद तु ईश्वर को पहचान जाएगा। बर्तमान में आदि गुरु शंकराचार्य, गुरु गोरख नाथ , बल्लभाचार्य , रामानान्दा , मद्हब , निम्बार्क , गौरिया बासबदत्ता, कबीरदास , रबिदास , और ज्ञानेश्वर की परंपरा के

गुरुयों को ही सनातन हिन्दू धर्म का धर्मगुरु माना जाता हैं। शंकराचार्य को हिन्दू धर्म में इन सबसे प्रभाब शाली दारशनिकों में से एक माना जाता है। वह धर्म में परिभाषित करने के लिए जिम्मेदार थे। उनहोनें अदैत बेदान्ती बिकास में भी जोगदान दिया, जो हिन्दू दर्शन क एक पाठशाला भी है जो गैर-द्वैत और सभी बास्ताबिकता की एकता पर जोर देता है। ब्यास्देब का ब्रम्भसूत्र, बेदांत दर्शन का आधारभूत ग्रन्थ हैं। इसे बेदान्त सूत्र, उत्तर-मीमांसा सूत्र , शारीरक सूत्र और भिक्षु सूत्र आदि के नाम से भी जाना हैं । ब्रम्भसूत्र में उपनिसदों की दार्शनिक एबं आध्मातिकबिचरों को साररूप में एकीकृत किया गया है।
बेदान्त के तिन मुक्ष्य स्तम्भ माने जाते हैं – उपनिषद, श्रीमत्भागबतगीता एबं ब्रम्भसूत्र। इन तीनो को प्रस्थानत्रयी कहा जाता हैं। इससे उपनिषद को श्रुति प्रस्थान , गीता को स्मृति प्रस्थान और ब्रम्भसूत्रों को न्याय प्रस्थान कहते हैं। ब्रम्भसूत्रों को न्याय प्रस्थान कहने का अर्थ है कि वे बेदान्त को पूर्णत: तर्कपूर्ण ढंग से प्रस्तुत करता है।

आचार्य शंकर के बेदान्त में अद्वय रूप ब्रम्भा को ही भांति दो लक्ष्मनो से युक्त माना गया है , जिसे ब्रम्भ का स्वरुप लक्ष्मण कहा जाता है। ब्रम्भ का स्वरुप लक्ष्मण एबं तटस्थ लक्ष्मण कहा जाता है। ब्रम्भ का स्वरुप लक्ष्मण एबं तटस्थ लक्ष्मण ब्रम्भ के दो रूप है – पर ब्रम्भ और अपर ब्रम्भ को सगुण ब्रम्भ कहा जाता है।

शंकर के अनुसार ब्रम्भ का स्वरुप क्या है ?

यह असीमित और पारलौकिक है, ब्रम्भ का सार पूर्ण ज्ञान है। शंकर के अनुसार की प्रकृति को किसी भी सकारात्मक वर्णन द्वारा व्यक्त नहीं किया जा सकता है, क्योंकि इससे यह सीमित हो जायेगा।

शंकर के अनुसार मोक्ष क्या है ?

शंकर सिखाते हैं कि आध्मत्तिक मुक्ति (मोक्ष) ब्यक्तिगत स्व के ज्ञान के माध्यम से प्राप्त की जाती है। ब्याक्तिगत आत्मा को ब्याक्तिगत स्व के अज्ञान द्वारा शारीर के बंधन में रखा जाता है, लेकिन ब्यक्तिगत स्व के ज्ञान द्वारा शारीर से मुक्त कर दिय जाता है।

शंकर के अनुसार माया क्या है ?

माया शब्द सीमित संसार के भ्रामक चरित्र का प्रतिक है। शंकर रस्मी और सांप, बाजीगर और बाजीगर, रेगिस्तान और मृगत्रिस्ना, और स्वप्नद्दष्टा और स्वप्न की उपमाओं द्वारा माया अवधारणा की व्याख्या करते है।

शंकराचार्य द्वारा ब्रम्भ क्या है ?

शंकर के अनुसार, एकमात्र अपरिबर्तानीय इकाई (ब्राम्भन) ही बास्तबिक है, जबकि बदलती संस्थाओं का पूर्ण अस्तित्व नहीं है।
शंकराचार्य भारत के चार स्थानों मे मठ बनाया था। जैसे द्वारका मे सारदा मट आचार्य सुरेस्वराचार्य, उनकें उपाधि बिश्वरूप इस मट में सामवेद को प्राधान्य देते हैं। इस मट के अधीन तीर्थ और आश्रम सम्प्रदाय, महावाक्य “तत्तमसी”।
पुरीधाम में बन और आश्रम सम्प्रदाय, आचार्य पद्मपाद उपाधि प्रकाश। इस मट में ऋग्वेद को प्राधान्य देते हैं, महाबाक्य “प्रज्ञांनं ब्रम्भ”।
ज्योतीरधाम में ज्योतीर मट हैं। आचार्य तोटक उपाधि आनन्द, इस मट में अथर्बवेद को प्राधान्य देते हैं, गिरी, पर्बत और सागर सम्प्रदाय हैं, महाबाक्य “अयमात्मा ब्रम्भ”।
श्रृंगेरी मट में अथर्ववेद को प्रधान्न्य देते हैं, सरस्वती, भारती और पूरी सम्प्रदाय हैं। आचार्य हस्तामलक उपाधि चैतन्न्य, महाबाक्य “अहं ब्रमाष्मी”।

****

अंटार्कटिका की डायरी से

श्री रूप कुमार दास, अधिकारी सर्वेक्षक
पश्चिम बंगाल व सिक्किम भू-स्थानिक निदेशालय

14-12-1998, हम लोगों की यात्रा शुरू हुई गोवा के मडगाओं पोर्ट से। यात्रा शुरू होने के पहले तारीख था, 08-12-1998 लेकिन आखिर में छः दिन बाद हम लोग चल पड़े। कुल 63 आदमी थे, जिसमें 57 विज्ञानी और 6 जन हेलीकाप्टर/पायलट इंजीनियर थे। यात्रा शुरू होने के दस दिन पहले हम लोग गोवा पहुंच गए थे। आखिर में शुरुआत का सब काम ठीक-ठाक करके निपटने के बाद 14 तारीख M.V. Polar Bird जहाज से हमारा यात्रा शुरू हुआ था।

सुबह से तैयारी में लगे हुए थे , हम दो मेंबर सर्वे ऑफ़ इंडिया से भाग लिए थे। मैं और कमल शर्मा जी। शर्मा जी चंडीगढ़ से आये थे, और मैं कोलकाता से भाग लिए थे। सुबह में शर्मा जी के मन में आया कि हमारा ऑफिस का एक बैनर होने से अच्छा होता। लेकिन समय कम होने से हम लोग ठीक किये कि अपना हाथ से तैयार करेंगे। इस लिए रंग, तुली और कपड़ा लेकर बाजार से आये और हाथ से दोनों मिलकर हमारे ऑफिस का नाम और पता लिखकर जहाज का डेक में दूसरे डिपार्टमेंट का बैनर के पास लगाये थे। सुबह में Antarctic Study Centre के मैदान में यात्रा शुरू होने के पहले अनुष्ठान का आयोजन किया गया था। जिसमे मुख्य अतिथि के रूप में गोवा के मुख्यमंत्री, मुख्यसचिव एवं गोवा विकास मंत्री उपस्थित थे। एक सफ़ेद कबूतर को हवा में उड़ाकर मुख्यमंत्री महोदय ने हमारा अभियान शुरू किया। व्यक्तिगत रूप से वे हम लोगों से मिले। दोपहर हो गया फिर आधिकारिक तौर पर आप्रवासन हुआ। फिर हम लोग अपना व्यक्तिगत सामान ले कर जहाज के तरफ चल पड़े। मर्मागाओ बन्दरगाह का 10 No. जेटी मे जहाज खड़ा था। रुक-रुक कर हम लोग सीढी के ऊपर चढे और अपने-अपने केबिन के तरफ चल पड़े।

कुछ भी पता नहीं था। एक नंबर मिला था Cabin No. B-8 । जहाज के अंदर मे तीर चिन्ह से पता चला हम दोनों का एक केबिन मिला था जबकि वह केबिन चार आदमी के रहने लायक केबिन था। सामान छोड़ कर हम लोग डेक पर आये। बहत सारा सदस्य के परिवार आये हुए थे विदाई देने के लिए। सब के आँखों मे आंसू दिखाई दे रहा था। अपना जन्मभूमि, अपना परिवार सब छोड़ कर देश के सेवा में इतना दूर जाना और उस रास्ते के हर एक मोड़ पे खतरे का निशान दिखाई पड़ना यह कि आने वाले दिनों मे दिखाई दिया। मेरा और शर्मा जी के घर से छोड़ने के लिए कोई नहीं था लेकिन हम लोगों को भी वही महसूस हुआ था जो दुसरो को हुआ था। हमारे आँखों मे भी पानी आ गए थे । हजारो मिले दूर से माताजी, पिताजी , परिवार के अन्य सदस्य को छोड़ कर जाना एक बड़ा बात थी। विभागीय फील्ड के लिए भारतवर्ष के किसी भी जगह से घर पहुंचा जा सकता है, लेकिन जिस जगह में जा रहा हूं वहा से घर आना असंभव नहीं नामुमकिन हैं।

शाम होने वाला था, डूबते हुए सूरज के आखिरी रौशनी रोते हुए चहरे में और भी गंभीरतापूर्वक माहौल बनाया था। लम्बा सिटी दे कर हम लोगों का जहाज धीरे-धीरे गहरे पानी की तरफ जा रही थी। अरब सागर के लहर में जहाज थोड़ा-थोड़ा हिलने लगा था। तट से इलेक्ट्रिक लाइट की रौशनी छोटी

होती जा रही थी। कुछ देर में वह भी दिखाई देना बंद हो गया। ठंढा हवा लगने से मन थोड़ा शांत होने लगा।

अभी में M.V. Polar Bird के बारे मे थोड़ा जानकारी दे रहा हूं। नॉर्वे का बना हुआ यह जहाज लम्बाई में 109.6m अर्थात लगभग 360 ft और चौड़ाई में 19m अर्थात 60 ft था। बर्फ तोड़ने वाला ये जहाज दो मीटर का बर्फ तोड़ सकता था। इसके अंदर में तीन हेलीकाप्टर और 18th Expedition का पूरा सामान रखा गया था। साथ में हम लोगों के लिए रसद भी थे। अंदर में एक वॉलीबॉल कोर्ट, एक स्विमिंग पूल भी था। ये सब जानकारी मिलने में मुझे कुछ दिन लगे थे।

शाम सात बजे रात का खाना खाने के लिए डिनर रूम में आना पड़ा। दिन भर के थकावट से लग रहा था कि डिनर कर के केबिन में विश्राम करूं, लेकिन डिनर के समय हमारा लीडर अजय धर साहब ने बोला कि पहले दिन कुछ देर तक जहाज के डेक पर रहना चाहिए, नहीं तो समुद्री बीमारी हो सकता है। हम लोग डिनर के बाद बाहर आ गए और बहुत देर तक वहीं रहे। ठंढी हवा चल रही थी। चारों ओर केवल पानी और पानी ही दिखाई दे रहा था। और साथ में था, सितारों से भरा खुला आसमान। इतना सुन्दर आसमान और कही मिलता नहीं। बातों-बातों में रात हो गया। और आखिर में हम लोग अपने-अपने केबिन में लौट आये।

आने वाले अनिश्चित भविष्य के बारे में सोचते हुए और पानी के लहर में जहाज के ऊपर नीचे होते-होते कब नींद आ गया पता ही नहीं चला। आखिर में स्वप्न पूरे हुए। 18th Antarctica अभियान की शुरूआत हो चुकी थी।

****

नैनीताल – अल्मोड़ा – राणीखेत – कौसानी भ्रमण

श्री अंसुमन सरकार, अधिकारी सर्वेक्षक
पश्चिम बंगाल व सिक्किम भू-स्थानिक निदेशालय

पाँच साल पहले एल.टी.सी. लेकर मैं अपने परिवार के साथ नैनीताल, अल्मोड़ा, राणीखेत और कौसानी घूमने गया था। मेरे दफ्तर के एक दोस्त और उनके परिवार भी हमारे साथ थे। हमलोगों ने ट्रेन से पहले कोलकाता से काठगोदाम पहुंचे और वहां से गाड़ी में बैठकर नैनीताल पहुंचे। अगले दिन नैनीताल की सैर की और वहां से गरम कपड़े खरीदे उसके बाद फिर उसी गाड़ी से हमलोग अल्मोड़ा और बाद में कौसानी गए। कौसानी में काफी ठंढ थी। हमलोगों ने वहां ठंढी-ठंढी पहाड़ी हवा का आनंद लिया। कौसानी से हमने त्रिशूल, नंदादेवी और पंचचुल्ली पहाड़ों का खूबसूरत नजारा देखा। सात दिन हमलोग एक साथ घूमने के बाद गाड़ी से काठगोदाम में आए। वापस आते समय हमलोग राणीखेत का सुंदर नजारा देखा। फिर काठगोदाम से रेलगाड़ी के जरिए हमलोग कोलकाता वापस आए।

इति शुभम्

TOTAL STATION
टोटल स्टेशन

SURVEY OF INDIA

D.T.HAOKIP

1997

BSF

PORTAL
Services To
RESEARCHER
INDIVIDUAL
BUSINESS
Online Maps Services
Researcher
Individual
DEPARTMENT OF SCEINCE & TECHNOLOGY
SURVEY OF INDIA

रंग बिरंगी दुनिया

निदेशालय के अधिकारियों, कर्मचारियों एवं उनके परिजनों की कलात्मक प्रतिभा का आनंद लें

सुश्री शुचि दास
सुपुत्री: श्री शुभेश कुमार, कार्यालय अधीक्षक
पश्चिम बंगाल व सिक्किम भू-स्थानिक निदेशालय

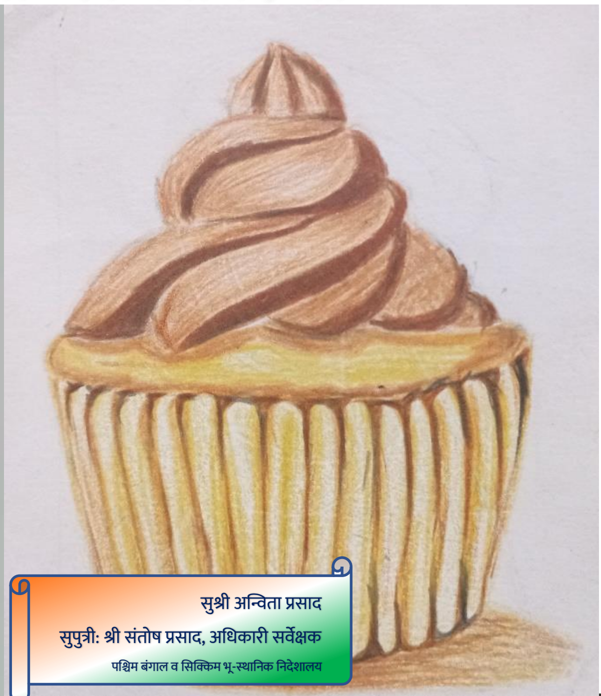

सुश्री अन्विता प्रसाद
सुपुत्री: श्री संतोष प्रसाद, अधिकारी सर्वेक्षक
पश्चिम बंगाल व सिक्किम भू-स्थानिक निदेशालय

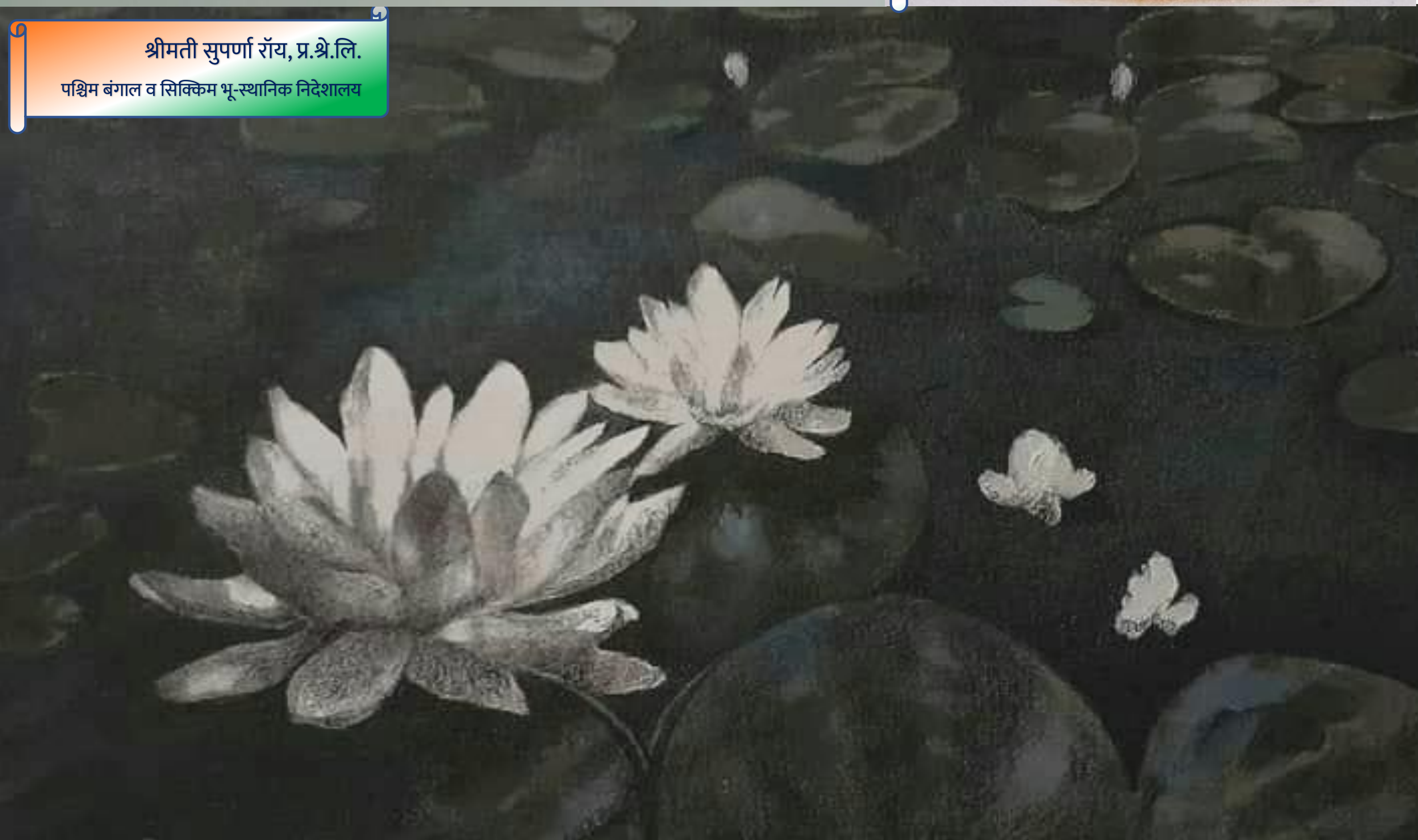

श्रीमती सुपर्णा रॉय, प्र.श्रे.लि.
पश्चिम बंगाल व सिक्किम भू-स्थानिक निदेशालय

सुश्री शेफाली कुमारी
सुपुत्री: श्री उदय शंकर प्रसाद , निदेशक
पश्चिम बंगाल व सिक्किम भू-स्थानिक निदेशालय

सुश्री शुचि दास
सुपुत्री: श्री शुभेश कुमार, कार्यालय अधीक्षक
पश्चिम बंगाल व सिक्किम भू-स्थानिक निदेशालय

सुश्री प्रीती सरकार

सुपुत्री: श्री स्वपन कुमार सरकार, कार्यालय अधीक्षक

पश्चिम बंगाल व सिक्किम भू-स्थानिक निदेशालय

श्री कीर्तिमान सरकार

सुपुत्र: श्री स्वपन कुमार सरकार, कार्यालय अधीक्षक

पश्चिम बंगाल व सिक्किम भू-स्थानिक निदेशालय

सुश्री शुचि दास

सुपुत्री: श्री शुभेश कुमार, कार्यालय अधीक्षक

पश्चिम बंगाल व सिक्किम भू-स्थानिक निदेशालय

श्री कीर्तिमान सरकार

सुपुत्र: श्री स्वपन कुमार सरकार, कार्यालय अधीक्षक

पश्चिम बंगाल व सिक्किम भू-स्थानिक निदेशालय

श्री अंश प्रसाद

सुपुत्र: श्री उदय शंकर प्रसाद, निदेशक

पश्चिम बंगाल व सिक्किम भू-स्थानिक निदेशालय

सुश्री अन्विता प्रसाद
सुपुत्री: श्री संतोष प्रसाद, अधिकारी सर्वेक्षक
पश्चिम बंगाल व सिक्किम भू-स्थानिक निदेशालय

सुश्री शुचि दास

सुपुत्री: श्री शुभेश कुमार, कार्यालय अधीक्षक

पश्चिम बंगाल व सिक्किम भू-स्थानिक निदेशालय

श्री रेबान्ता मुखर्जी
सुपुत्र: श्रीमती शम्पा मुखर्जी, कार्यालय अधीक्षक
पश्चिम बंगाल व सिक्किम भू-स्थानिक निदेशालय

श्री उदित प्रकाश श्रेयांश

सुपुत्र: श्री शुभेश कुमार, कार्यालय अधीक्षक

पश्चिम बंगाल व सिक्किम भू-स्थानिक निदेशालय

श्री उदित प्रकाश श्रेयांश

सुपुत्र: श्री शुभेश कुमार, कार्यालय अधीक्षक

पश्चिम बंगाल व सिक्किम भू-स्थानिक निदेशालय

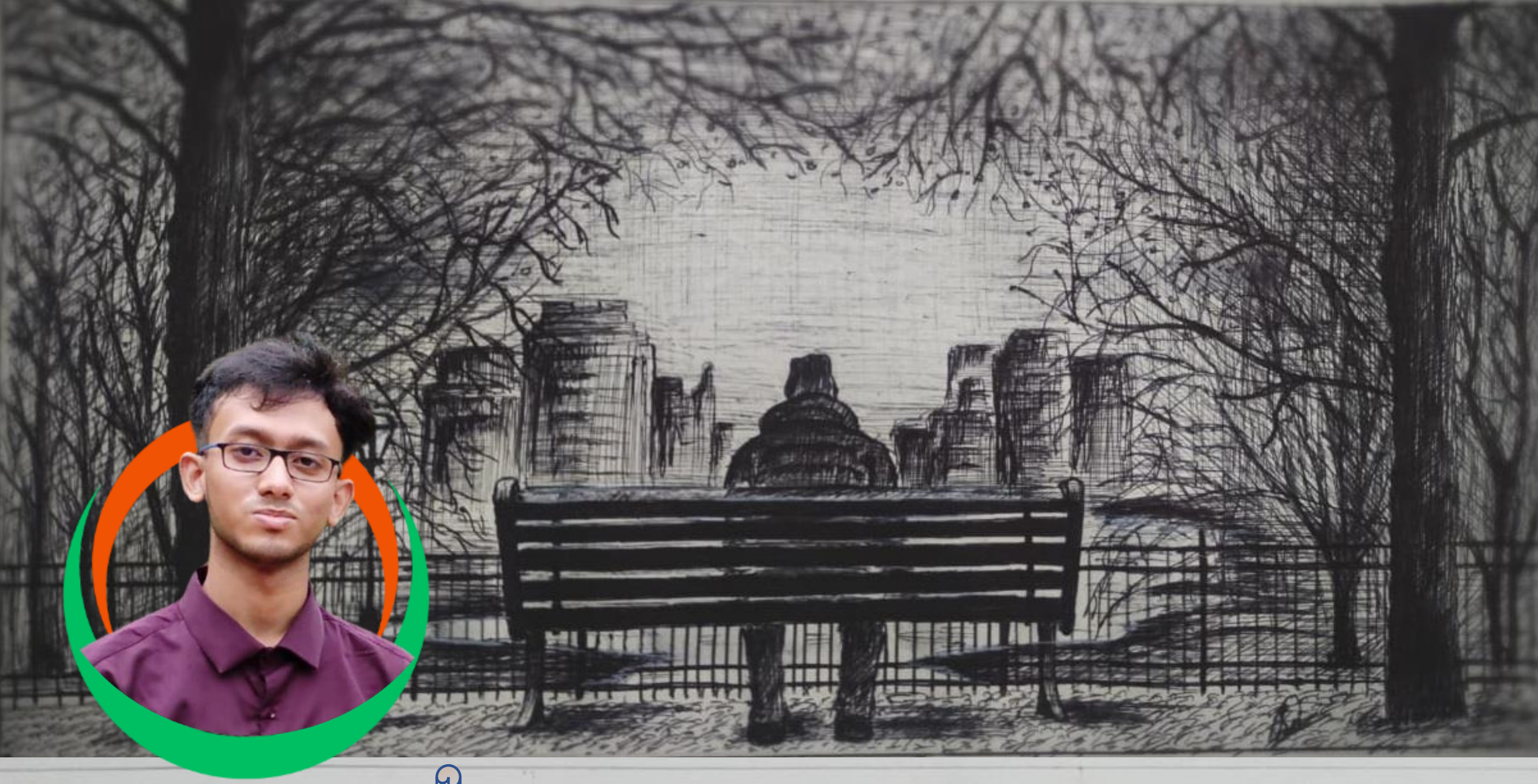

श्री सोहम मण्डल: सुपुत्र श्री तारापदा
मण्डल, मानचित्रकार डिवि.।
पश्चिम बंगाल व सिक्किम भू-स्थानिक निदेशालय

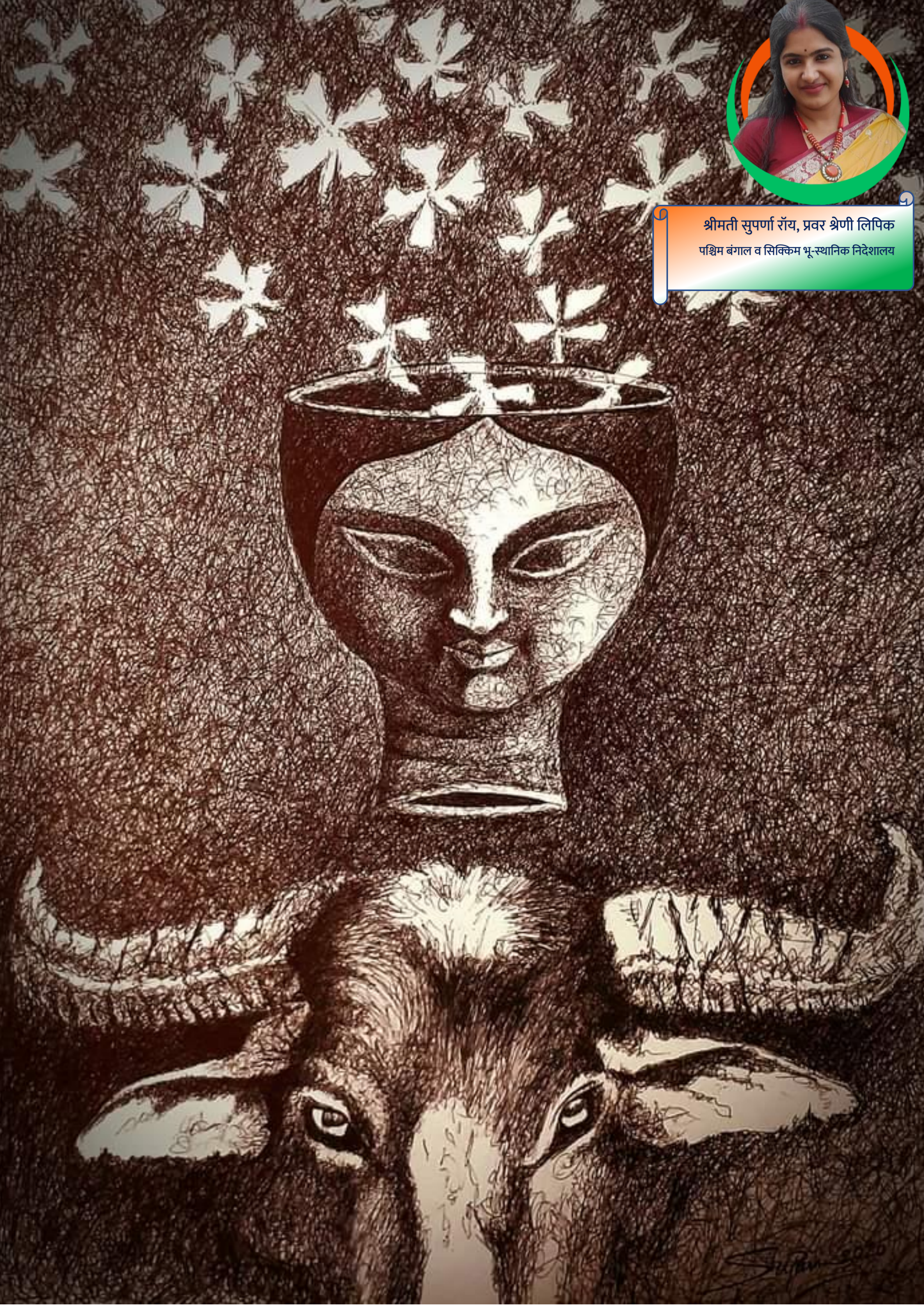

श्रीमती सुपर्णा रॉय, प्रवर श्रेणी लिपिक
पश्चिम बंगाल व सिक्किम भू-स्थानिक निदेशालय

सुश्री आरूणि रॉय
सुपुत्री: श्रीमती सुपर्णा रॉय, प्र.श्रे.लि.
पश्चिम बंगाल व सिक्किम भू-स्थानिक निदेशालय

श्री उदित प्रकाश श्रेयांश
सुपुत्रः श्री शुभेश कुमार, कार्यालय अधीक्षक
पश्चिम बंगाल व सिक्किम भू-स्थानिक निदेशालय

सुश्री शुचि दास
सुपुत्रीः श्री शुभेश कुमार, कार्यालय अधीक्षक
पश्चिम बंगाल व सिक्किम भू-स्थानिक निदेशालय

सुश्री शुचि दास

सुपुत्री: श्री शुभेश कुमार, कार्यालय अधीक्षक

पश्चिम बंगाल व सिक्किम भू-स्थानिक निदेशालय

सुश्री अन्विता प्रसाद: सुपुत्री श्री संतोष प्रसाद, अधिकारी सर्वेक्षक

पश्चिम बंगाल व सिक्किम भू-स्थानिक निदेशालय

सुश्री अन्विता प्रसाद: सुपुत्री श्री संतोष प्रसाद, अधिकारी सर्वेक्षक

पश्चिम बंगाल व सिक्किम भू-स्थानिक निदेशालय

श्री उदित प्रकाश श्रेयांश

सुपुत्रः श्री शुभेश कुमार, कार्यालय अधीक्षक

पश्चिम बंगाल व सिक्किम भू-स्थानिक निदेशालय

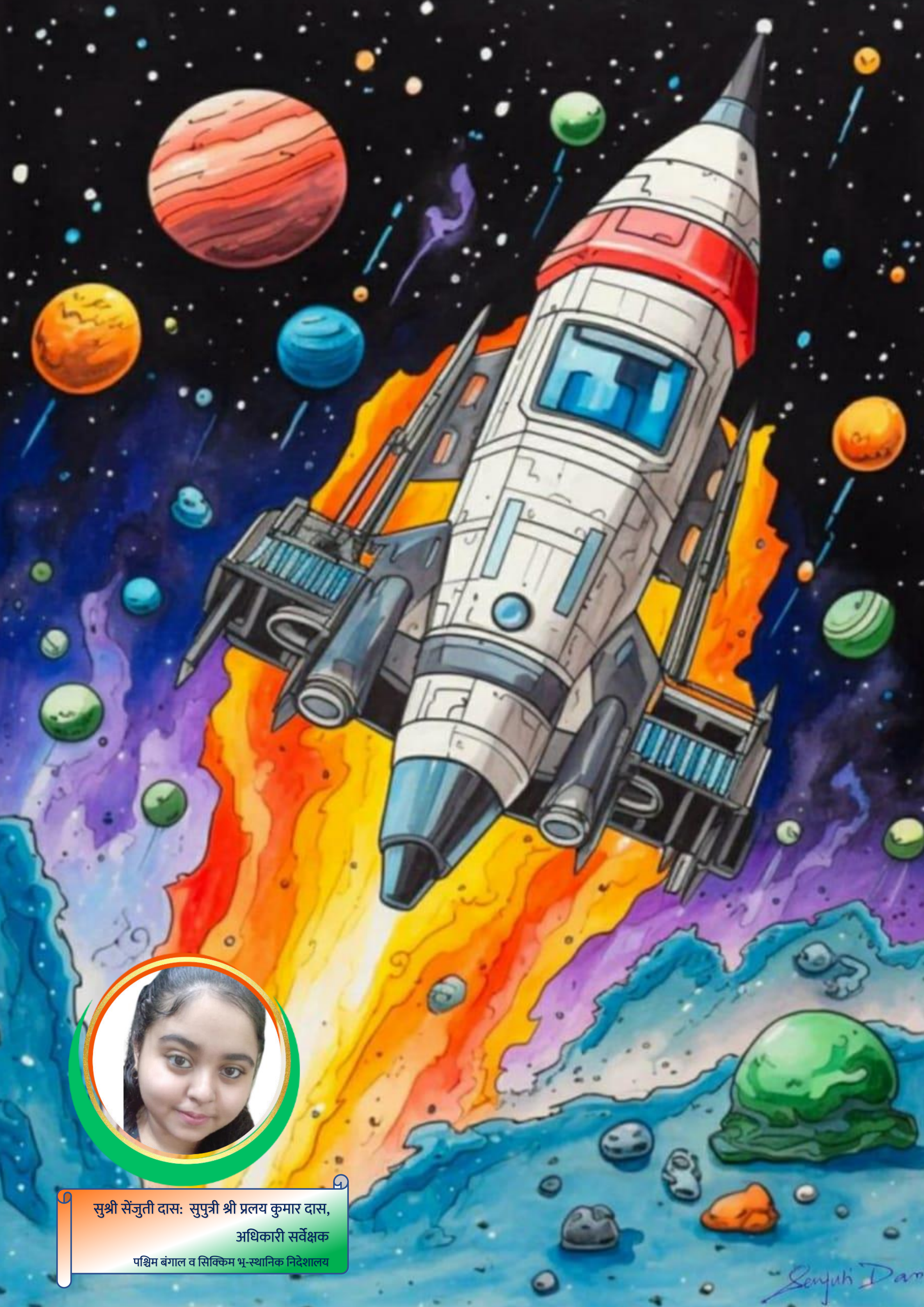

सुश्री सेंजुती दास: सुपुत्री श्री प्रलय कुमार दास,
अधिकारी सर्वेक्षक
पश्चिम बंगाल व सिक्किम भू-स्थानिक निदेशालय